झारखण्ड सरकार

अंक-4

आजीविका कनेक्शन

जोहार विशेषांक

Jharkhand State Livelihood Promotion Society

www.jslps.org

@onlineJSLPS

/onlineJSLPS

सखी मंडल की महिलाओं का एक मात्र प्रकाशन

उम्मीदों का जोहार

बदलते गाँव... संवरता झारखंड

कभी बारिश पर निर्भर रहने वाले झारखंड के किसान आज साल में दो से तीन बार फ़सलें उगा रहे हैं। इन किसानों को खाद-बीज से लेकर बाज़ार में उपज की अच्छी कीमतें भी मिल रही हैं। इतना ही नहीं, पशुपालन, मछलीपालन, वनोपज उत्पादन, कौशल प्रशिक्षण में ग्रामीण महिलाएं साथ मिलकर अपनी आय को बढ़ा रही हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के किसानों की आय को दोगुनी करने के लक्ष्य को साकार करने के लिए दो साल पहले शुरू हुई झारखंड सरकार की जोहार परियोजना से आज यह संभव हो रहा है। आजीविका के तहत इस मिशन पर काम करने की शुरुआत पहले से ही हो चुकी थी और जोहार उसे एक पायदान और ऊपर ले जा रहा है। 'जोहार' के तहत झारखंड के दो लाख परिवारों की आय दोगुनी करने का लक्ष्य रखा गया है।

फोटो: जेएसएलपीएस

जोहार से मिली झारखंड को नई पहचान

जोहार परियोजना के तहत राज्य के दो लाख ग्रामीण परिवारों को खुशहाली की ओर ले जाने का रखा गया है लक्ष्य

कुमार विकास

रांची (झारखंड)। खेती में मौसम की मार और बाजार में उपज का दाम न मिलना जैसी किसानों की कई समस्याओं का समाधान झारखंड सरकार आज जोहार परियोजना के जरिए कर रही है।

झारखंड राज्य की खेती मुख्यतः बारिश पर निर्भर रहती है। कभी सुखाड़, कभी बेमौसम बरसात तो कभी सही खाद-बीज न मिलने की वजह से किसान के लिए मेहनत के मुताबिक कमाई कर पाना आसान नहीं है।

वहीं अगर फसल अच्छी हुई तो कमाई किसान से ज्यादा बिचौलियों की होती है। यानी बाजार की कमी का नुकसान भी किसानों को ही होता है और बिचौलिये बिना कुछ किये अच्छी कमाई करते हैं। ऐसे में झारखंड सरकार ने किसानों की इन्ही परेशानियों को करीब से महसूस करते हुए 15 नवंबर 2017 को राज्य में जोहार परियोजना की शुरुआत की। झारखंड सरकार की इस महत्वाकांक्षी योजना का नाम है - जोहार। अपने नाम के मुताबिक इस योजना के तहत राज्य के दो लाख परिवारों को खुशहाली की ओर ले जाने का लक्ष्य रखा गया है।

एक नज़र में जोहार परियोजना

17 जोहार परियोजना के तहत कुल जिले

52 प्रखंड में

2346 गाँव जुड़े हैं राज्य के

2346 कुल उत्पादक समूह की संख्या

99575 उत्पादक समूह से जुड़ी हैं महिलाएं

1706 उन्नत खेती के अंतर्गत गठित उत्पादक समूहों की है संख्या

687 मत्स्य पालन के अंतर्गत निर्मित उत्पादक समूहों की है संख्या

405 पशुपालन के तहत गठित उत्पादक समूहों की है संख्या

3000 जोहार के अंतर्गत हैं प्रशिक्षित सामुदायिक कैडर

102663 जोहार परियोजना से जुड़े परिवार

10626 लघु वनोपज से जुड़े परिवारों की संख्या

आंकड़े मई 2019 तक

रघुवर सरकार की ख़ास पहल

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के किसानों की आय को दोगुनी करने के लक्ष्य को साकार करने के लिए भी झारखंड में आज जोहार परियोजना कार्य कर रही है। इसके तहत ग्रामीण महिलाओं को उत्पादक समूह में जोड़कर सामूहिक एवं साथ-साथ खेती करने के लिए बढ़ावा दिया जा रहा है। झारखंड के भौगोलिक और अन्य हालातों के मुताबिक, उच्च मूल्य खेती, मछलीपालन, पशुपालन, वनोपज उत्पादन, कौशल प्रशिक्षण, सिंचाई को प्राथमिकता पर रखा गया है और ग्रामीण परिवारों तक उत्पादक समूह के जरिए हर तरह का प्रशिक्षण और सहयोग दिया जाता है।

राज्य में अब तक 2000 से ज्यादा उत्पादक समूहों का गठन किया जा चुका है जो अलग-अलग गतिविधियों के जरिए किसानों की आय बढ़ोतरी के लिए कार्य कर रहे हैं।

हर उत्पादक समूह को आय वृद्धि के लिए आजीविका के दो साधनों से जोड़ा जा रहा है। उत्पादक समूह के सदस्यों को हर तरह के प्रशिक्षण एवं लाइव डेमो की व्यवस्था फ्री है ताकि ये अपने कार्यों में पूरी तरह से कुशल बन सकें।

उत्पादक समूह से जुड़े परिवारों को कई तरह से लाभ होता है। जैसे बड़े स्तर पर खेती करने से उत्पादक समूह के जरिए खाद-बीज आदि की खरीदारी हो जाती है, जिससे बचत के साथ-साथ उत्पादों की गुणवत्ता भी सुनिश्चित हो पाती है। वहीं उत्पादक समूह बाजार उपलब्ध कराने के साथ-साथ तकनीकी मदद भी सुनिश्चित करते हैं, जिससे किसान ज्यादा से ज्यादा लाभ कमा सके।

सबसे ज़्यादा ज़ोर उन्नत खेती और सिंचाई पर

ग्रामीण झारखंड की करीब 60 फीसदी आबादी खेती पर निर्भर है लिहाजा जोहार में सबसे ज्यादा जोर उन्नत खेती और सिंचाई पर है। उन्नत किस्म के खाद और बीज से उत्पादकता बढ़ेगी। वहीं ड्रिप और स्प्रिंकलर्स जैसे सिंचाई के संसाधनों से किसान कम पानी और कम खर्च में खेती कर रहे हैं जिससे उनका मुनाफा बढ़ रहा है।

आजीविका के तहत इस मिशन पर काम करने की शुरुआत पहले से हो चुकी थी। जोहार उसे एक पायदान और ऊपर ले जा रहा है।

उन्नत खेती के अलावा जोहार में पशुपालन, मछलीपालन, सिंचाई, प्रशिक्षण, वनोपज उत्पादन एवं कौशल प्रशिक्षण का भी प्रावधान है जिससे झारखंड के सुदूर गाँवों में बदलाव के संकल्प को सिद्धि तक पहुंचाया जा सके।

वर्तमान में पशुपालन के तहत बकरीपालन, अंडा उत्पादन के जरिए उत्पादक समूह की महिलाएं अच्छी कमाई कर रही हैं। वहीं परियोजना के तहत हजारों महिलाओं को पशु सखी के रूप में प्रशिक्षित कर गाँव में ही वेटनरी सुविधाएं मुहैया कराई जा रही हैं। मछलीपालन के जरिए डोभा से लेकर बड़े रिजर्वायर में भी मछली पालन को बढ़ावा दिया जा रहा है। झारखंड सरकार के मत्स्य विभाग की मदद से आज उत्पादक समूह की महिलाएं मछली पालन से जुड़कर भी अच्छी कमाई कर रही हैं। उत्पादक समूह की महिलाएं मछली पालन से औसतन 22 से 25 हज़ार रुपये सालाना कमा लेती हैं।

उत्पादक समूह से जुड़कर ग्रामीण महिलाएं एक साथ कर रही हैं खेती और साथ में बेचती हैं अपनी उपज। फोटोः जेएसएलपीएस

इनकी आमदनी में और बढ़ोतरी हुई

जोहार के तहत आधुनिक संसाधन मुहैया कराने के बाद इनकी आमदनी में और बढ़ोतरी हुई है। गुमला जिले में दर्जनों जगह पर सिंचाई की दिक्कतों को दूर करने के लिए लिफ्ट सिंचाई की व्यवस्था की गई है और ज्यादा से ज्यादा खेतिहर परिवारों को सिंचाई उपलब्ध कराई जा रही है ताकि साल में दो-तीन फसल किसान उपजा सके। वहीं जंगल से जुड़े इलाकों में जोहार के तहत लाह, औषधीय पौधे, लेमन ग्रास और सहजन की खेती पर खास ध्यान दिया जा रहा है, जिससे इसके उत्पादन से अच्छी कमाई हो सके।

जोहार के तहत प्रशिक्षित सामुदायिक कैडर्स को एग्रीकल्चर स्किल काउंसिल ऑफ इंडिया से सर्टिफिकेशन कराया जा रहा है, ताकि वो भविष्य में संगठित रूप से कार्य कर सकें। अब उन्नत खेती के नतीजे धरातल पर दिखने लगे हैं। रामगढ़ जिले के गोला प्रखण्ड के सरलाकलान उत्पादक समूह ने करीब ढाई मीट्रिक टन तरबूज थोक में सीधे व्यापारी को बेचा, जिससे बिचौलियों की जगह कमाई किसानों को हुई। वहीं खूंटी के जोहार उत्पादक समूह से जुड़ी महिलाओं ने तरबूज का बंपर उत्पादन कर सीधे रिलायंस और फ्यूचर ग्रुप जैसे कंपनियों को बिक्री किया जिससे उन्हें अच्छी खासी कमाई हुई।

'ताकि किसानों की आय दोगुनी की जा सके'

"जोहार परियोजना ग्रामीण महिलाओं की आजीविका को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। सामूहिक खेती के जरिए आय बढ़ोत्तरी एवं सामाजिक जुड़ाव का भी फायदा उन्हें मिल रहा है। मछली पालन, एंटीएसटी, उच्च मूल्य खेती, पशुपालन के अलावा सिंचाई पर भी सरकार ख़ासा जोर दे रही है ताकि किसानों की आय दोगुनी की जा सके।

पारितोष उपाध्याय,
सीईओ, जेएसएलपीएस

'अब मिलती है सही क़ीमत'

रामगढ़ जिले के ही औराडिह उत्पादक समूह की रश्मिता देवी बताती हैं, "उत्पादक समूह के जरिए हमारी खेती और पशुपालन के खर्चों में कमी आई है, सारा सामान हम थोक में मिलकर खरीदते हैं। अब हमें बिक्री के लिए बिचौलियों के चक्कर में नहीं फंसना पड़ता। हमारे उत्पादक समूह के जरिए हमें जो कीमत मिल रही हैं, वो अकेले बेचने पर कभी नहीं मिल पाती।" झारखंड में ये कहानी अब सिर्फ रश्मिता की नहीं है, बल्कि बदलाव की ये कहानियां अब झारखंड के गाँवों में आम हो चली हैं। पलामू जिले के चैनपुर प्रखण्ड के ओम आजीविका बकरी उत्पादक समूह की सदस्य विमला देवी बताती हैं, "जोहार परियोजना के जरिए हम लोगों के पशुपालन का तरीका अब बदल गया है। अब हम पशु सखी दीदी के जरिए समय-समय पर अपनी बकरियों को डिवार्मिंग और टीकाकरण करवाते हैं।श्वह आगे कहती हैं, श्पहले अक्सर हमारी बकरियां बीमारी से मर जाती थी पर अब ऐसा नहीं होता है। हमारी कमाई बढ़ी है और उत्पादक समूह हमें अपने काम को आगे बढ़ाने का बल देता है।"

गरीबी से मुक्त कराने का बना नया मंत्र

गाँवों से गरीबी मिटाने की जो शुरुआत दीनदयाल अंत्योदय योजना- राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन से हुई थी, वो अब एक नई योजना के साथ झारखंड के महिलाओं और किसानों के परिवारों में खुशहाली ला रही है और 'जोहार' गाँवों को गरीबी से मुक्त कराने का नया मंत्र बना है।

झारखंड सरकार की इस महत्वाकांक्षी योजना जोहार का मकसद गरीब परिवारों को रोजगार के एक या एक से अधिक साधनों से जोड़कर उनकी आय में गुणात्मक बढ़ोत्तरी करना है। इस परियोजना के जरिये साल 2022 तक किसानों की आय दोगुनी करने के लिए लगातार प्रयास जारी है।

फोटो: जेएसएलपीएस

सामूहिक खेती से खिली महिलाओं की ज़िंदगी

जोहार परियोजना के तहत उत्पादक समूह बनने से छोटी जोत वाली ग्रामीण महिलाएं सामूहिक खेती से अब कमा रहीं अच्छा मुनाफ़ा

आजीविका कनेक्शन डेस्क

रामगढ़/लोहरदगा (झारखंड)। छोटी जोत के किसानों की खेती में लागत कम आए, बाजार से बिचौलिये खत्म हों ताकि किसानों को सीधे लाभ मिल सके, इसका हल अब झारखंड की महिला किसानों ने खोज निकाला है।

ये महिलाएं सामूहिक रूप से खेती कर रही हैं और अपने उत्पाद को एक साथ सीधे बाजार भेजती हैं, जिससे इनकी आमदनी में काफी सुधार हुआ है।

झारखंड में ज्यादातर किसान छोटी जोत के हैं। इनके पास जमीन के छोटे-छोटे टुकड़े हैं। ऐसे में एक किसान एक फसल लगाकर उससे अच्छा मुनाफा कमा पाए, ये असम्भव है। पर सामूहिक खेती करके यहाँ की महिला किसानों ने इसे सम्भव करके दिखा दिया है।

जहां सामूहिक खेती करने पर इन महिला किसानों को एक साथ खाद-बीज उत्पादक समूह के जरिये कम दरों में मिल जाता है, वहीं ये एक साथ गाड़ी करके अपनी सब्जियां सीधे बाजार पहुंचाती हैं, जिससे इन्हें अब दिन भर बाजार में बैठकर सब्जी बेचने से मुक्ति मिल गई है।

रामगढ़ जिला मुख्यालय से 32 किलोमीटर दूर गोला ब्लॉक के टोनागातू गाँव में कुछ महिलाएं बीन तोड़ रही थीं और उसे बोरी में भरकर खेत के पास खड़ी गाड़ी में लोड कर रहीं थीं।

'अब हमें रोज़ बाज़ार नहीं जाना पड़ता'

पूछने पर तीरथी देवी (28 वर्ष) बताती हैं, "अब हमें दो तीन किलोमीटर दूर पैदल चलकर रोज सब्जी बेचने के लिए बाजार नहीं जाना पड़ता और न ही पूरे दिन बाजार में बैठना पड़ता। हम तीन चार दीदी एक साथ सब्जी तोड़कर इस गाड़ी से बाजार भेज देते हैं। दो तीन घंटे में थोक के भाव सब्जी बिक जाती है और हमें नगद पैसा मिल जाता है।"

तीरथी कहती हैं, "हम लोग मिलकर गाड़ी का भाड़ा दे देते हैं। एक साथ बेचने पर हमारे पास इतनी सब्जी हो जाती है, जिससे पूरी गाड़ी भर जाए। कोई एक या दो दीदी इस गाड़ी से बाजार चली जाती, जहां हाथों-हाथ सब्जी बेचकर वापस आ जाती हैं।"

सामूहिक खेती करके एक साथ बाजार में सब्जी बेचने का यह दृश्य झारखंड के केवल गोला ब्लॉक में ही नहीं, बल्कि ये नजारा राज्य के उन 17 जिलों में मिलेगा, जहां जोहार परियोजना के तहत 2100 से ज्यादा उत्पादक समूह अब तक बन चुके हैं।

सामूहिक खेती के ये हैं फ़ायदे

उत्पादक समूह से जुड़ी महिलाएं सामूहिक खेती के कई फायदे गिनाती हैं। इनका मानना हैं इससे न केवल लागत कम आती है बल्कि समय और मेहनत भी कम लगती है। कुडू ब्लॉक के छोटकी चापकी गाँव में दीप महिला किसान उत्पादक समूह की अध्यक्ष कुलसुम बीबी (34 वर्ष) बताती हैं, "अगर एक महिला अपने तीस डिसमिल खेत के लिए बाजार से बीज लेने जाती है तो आने-जाने का खर्चा और दिन के दो-तीन घंटे की बर्बादी।

> अब हमें दो तीन किलोमीटर दूर पैदल चलकर रोज सब्जी बेचने के लिए बाजार नहीं जाना पड़ता और न ही पूरे दिन बाजार में बैठना पड़ता। हम तीन चार दीदी एक साथ सब्जी तोड़कर इस गाड़ी से बाजार भेज देते हैं। दो तीन घंटे में थोक के भाव सब्जी बिक जाती है और हमें नगद पैसा मिल जाता है।
>
> तीरथी देवी

अब एक साथ बाज़ार भेजते हैं सब्जियां

गीता कहती हैं, "समूह की कोई एक या दो दीदी बाजार से एक साथ बीज, खाद कीटनाशक दवाइयां ले आती हैं, इससे थोक में ये सब चीजें सस्ती पड़ जाती हैं। पहले हर दीदी अपनी-अपनी टोकरी लेकर एक से दो किलोमीटर पैदल चलकर आटो पकड़ती थी और अलग-अलग जगहों पर जाकर पूरे दिन बैठकर सब्जी बेचती थी। ऐसे मेहनत भी ज्यादा लगती थी और पूरे दिन बाजार में बैठना पड़ता था लेकिन अब एक साथ सब्जी बाजार भेजने से बहुत आराम हो गया है।" गीता अपने उत्पादक समूह की आजीविका कृषक मित्र भी हैं। एक आजीविका कृषक मित्र हर एक उत्पादक समूह में होती है। इनका काम खुद ट्रेनिंग लेकर उत्पादक समूह से जुड़ी दूसरी महिलाओं को खेती में आ रही समस्याओं को सुलझाना और खेती करने के ऐसे तरीके बताना है, जिससे इनकी लागत कम आये। उत्पादक समूह की वन देवी (60 वर्ष) बताती हैं, "हम वर्षों से एक ही ढर्रे पर खेती करते आ रहे थे, लेकिन अब कब क्या फसल लगाना है और कैसे फसल की देखरेख करनी है, जिससे अच्छा पैदावार हो, इस पर समूह में बातचीत होती है। वही थोड़ी जमीन में जहाँ कल तक मेहनत और लागत दोनों ज्यादा लगती थी, लेकिन कमाई ज्यादा कुछ नहीं होती थी, लेकिन अब एक साल से ही मिलकर खेती करने का फायदा दिखाई दे रहा है।" रामगढ़ जिले की तरह लोहरदगा जिले में भी उत्पादक समूह की महिलाएं ऐसे ही मिलकर सामूहिक खेती कर सीधे बाजार में सब्जियां भेज रही हैं। कुडु प्रखंड के सुन्दर पंचायत में मार्च 2018 में गठित सुकुमार महिला किसान उत्पादक समूह की 22 महिलाओं ने पिछले साल 30-30 डिसमिल में गोभी लगाई थी। छह टन गोभी एक लाख छियालिस हजार साठ रुपए की बिकी थी।

सामूहिक रूप से खेती के लिए प्रेरित कर रहे

जोहार परियोजना के तहत सखी मंडल से जुड़ी महिलाओं को उत्पादक समूह में जोड़कर इन्हें न केवल सामूहिक रूप से खेती करने के लिए प्रेरित किया जाता है, बल्कि एक साथ अपने उत्पादों को बाजार भेजने पर भी जोर दिया जाता है। टोनागातू गाँव में जनवरी 2018 में टोनागातू आजीविका महिला किसान उत्पादक समूह का गठन किया गया, जिसमें सखी मंडल की 73 महिलाएं जुड़ी हुई हैं। ये खेती तो वर्षों से करती आ रही थीं, लेकिन सामूहिक खेती ये उत्पादक समूह बनने के बाद पहली बार कर रही हैं, जिसके इन्होंने कई फायदे गिनाए। उत्पादक समूह की गीता देवी (32 वर्ष) सामूहिक खेती के फायदे गिनाते नहीं थकतीं, वो बताती हैं, "पहले हम लोग अपनी-अपनी जरूरत के हिसाब से बाजार से बीज और खाद खरीदते थे, जिसमें समय और पैसे दोनों ज्यादा खर्च होता था। अब तो हर महीने की 10 और 25 तारीख को उत्पादक समूह की बैठक होती है, जिसमें जिसको जितना खाद और बीज की जरूरत होती है वो नोट करा देता है।"

तीन हज़ार की लागत, 12 हज़ार की आमदनी

उत्पादक समूह की सचिव गीता देवी (36 वर्ष) बताती हैं, "हमारी 30 डिसमिल जमीन में तीन हजार गोभी की लागत आई और 12 हजार की आमदनी हुई। पहली बार ऐसा हुआ है कि हमारे गाँव की महिलाएं खेती को बिजनेस मानने लगी हैं। अभी तक तो यही सोचते थे कि इतना पैदा हो जाए जिससे खर्चा चलता रहे पर अभी हम लोग ऐसा नहीं सोचते।" वो बताती हैं, "जानकारी होने के बाद अब हम सोचते हैं कि कम खेत में ही हम कैसे अच्छा लाभ ले सकते हैं। पहले बाजार में मोलतोल करके जो जैसे सब्जी खरीदता हम फुटकर दे देते थे, लेकिन अब जब एक साथ ग्रेडिंग के साथ हमारी सब्जी बाजार में जाती है तो हम बाजार भाव के हिसाब से ही सब्जी बेचते हैं।" गीता कहती हैं, "उत्पादक समूह से जुड़ी महिलाओं को प्रशिक्षण के बाद इतना सक्षम बनाया जा रहा है जिससे ये खेती को बिजनेस के तौर पर देखें और अच्छा मुनाफ़ा कमायें।"

फोटोः जेएसएलपीएस

उच्च मूल्य खेती से किसानों के चेहरों पर खिली मुस्कान

आजीविका कनेक्शन डेस्क

पूर्वी सिंहभूम/लोहरदगा। किसान पारंपरिक फ़सलों को कम करके ऐसी फ़सलें लगाएं जिसमें उनको अच्छी आमदनी हो इसलिए किसानों को ज्यादा से ज्यादा सब्जियों की खेती करने के लिए उत्साहित किया जा रहा है। ऐसे में जोहार परियोजना के तहत किसानों को उच्च मूल्य खेती में ऐसी फसलों का प्रशिक्षण दिया जा रहा है, जिससे वो साल भर अच्छी आमदनी ले सकें। सब्जी एक ऐसी फसल है जिसमें दूसरी फसलों की अपेक्षा अच्छी आमदनी होती है। उत्पादक समूह की महिलाओं को सब्जियों की मिश्रित खेती का प्रशिक्षण दिया जाता है जिससे ये अपनी छोटी जोत की जमीनों में सामूहिक रूप से खेती करके अच्छा मुनाफा कमा सकें। सब्जियों की खेती की शुरुआत ये महिला किसान कम से कम 30 डिसमिल की जमीन से कर रही हैं। इनके द्वारा उगाई गई इन सब्जियों को एक बेहतर मार्केट भी उपलब्ध कराया जा रहा है।

एक एकड़ खेत में पहली बार लगाई सब्जी

दूर तक खाली पड़े खेतों की तरफ इशारा करते हुए तुलसी मुर्मू (35 वर्ष) बताती हैं, "जिस खेत में आज आप सब्जियां लगी देख रही हैं एक साल पहले तक हमारा भी ये खेत इन खेतों की तरह खाली पड़ा रहता था। एक एकड़ खेत में पहली बार सब्जी लगाई है। मुनाफे की बात छोड़िये खाली पड़े खेत में सब्जी लगाना ही हमारे लिए बड़ी बात है।"

तुलसी झारखंड के जिस जिले में रहती हैं, वहां पानी की किल्लत की वजह से किसान खेती नहीं कर पाते हैं। यहाँ की सैकड़ों एकड़ जमीन बरसात के पानी पर निर्भर है। लेकिन उत्पादक समूह से जुड़ने के बाद तुलसी ने पहली बार गाँव के पास अपनी एक एकड़ जमीन में खेती करना शुरू किया। ये इस खेत की सिंचाई पास के कुएं से पम्पिंग सेट के द्वारा करती हैं। पूर्वी सिंहभूम जिला मुख्यालय से करीब 50 किलोमीटर दूर धालभूमगढ़ ब्लॉक के तिलाबनी गाँव में वर्ष 2018 में तिलाबनी आजीविका उत्पादक समूह का गठन किया गया। झारखंड में पानी की समस्या पूरे राज्य में हैं, ऐसे में जोहार परियोजना के तहत महिलाओं के उत्पादन समूह बनाये जा रहे हैं और उन्हें खेती करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। धालभूमगढ़ ब्लॉक की सैकड़ों एकड़ जमीन खाली पड़ी है, ऐसे में इन महिलाओं की पहल सराहनीय है।

देखा-देखी दूसरी महिलाएं भी हो रहीं प्रेरित

इस समूह की आजीविका कृषक मित्र सम्पा महतो (26 वर्ष) बताती हैं, "अभी कुछ महिलाएं अपनी जमीन के थोड़े हिस्से में ही सब्जियों की खेती कर रही हैं, इनके देखा-देखी दूसरी महिलाएं प्रेरित हो रही हैं। जो महिलाएं खेती कर रही हैं वो गाँव के कुएं से नजदीक है तो वो पम्पिंग सेट से सिचाई कर लेती हैं।"

उच्च मूल्य खेती करने से पहले बाजार की मांग को ध्यान में रखकर किसानों को वही सब्जी लगाने के लिए प्रेरित किया जाता है जिसकी बाजार में मांग ज्यादा रहती है। खेत की तैयारी से लेकर अच्छी गुणवत्ता वाले बीज किसानों को उपलब्ध कराए जाते हैं। जिससे किसान छोटी जमीन में बेहतर उत्पादन ले सकें।

जोहार परियोजना का प्रयास ये भी है कि किसानों को फुटकर सब्जी बेचने के लिए पूरे दिन बाजार में न बैठना पड़े। इसके लिए एक साथ किसानों की सब्जी कलेक्ट की जाती है और फिर वो थोक में बाजार भाव के हिसाब से बेची जाती हैं।

धान के किसान करने लगे सब्जियों की खेती

इन सब्जियों को खेत से निकलने के बाद अच्छा भाव मिले और ये बर्बाद न हो, इसके लिए पहले बाजार में सब्जी की मांग का पता कर लिया जाता है उसी हिसाब से वही सब्जी तोड़ी जाती है। इन सब्जियों की सॉर्टिंग ग्रेडिंग करके अलग-अलग करके बेची जाती है जिससे सब्जी की गुणवत्ता के अनुसार भाव मिलता है। जोहार परियोजना के शुरुआत के पहले साल में उच्च मूल्य खेती पूर्वी सिंहभूम, गुमला, लोहरदगा, खूंटी, रामगढ़ हजारीबाग जिले और दूसरे साल में बोकारो, धनबाद, रांची में शुरू की गयी है। जिन किसानों ने धान के अलावा कभी कोई फसल नहीं की थी, अब वो किसान सब्जियों की खेती करने लगे हैं। रजनी उरांव (50 वर्ष) अपनी गोभी की फसल दिखाते हुए कहती हैं, "अब तो बाजार में ऐसा बीज आ गया है एक किलो लगाओ तो कई कुंतल पैदा होता है। पहले हमें ऐसे बीज की जानकारी नहीं थी। हम घर में रखें वही पुराने बीज बोते थे जो वर्षों से बोते आ रहे थे। उन बीजों को बोकर बिजनेस नहीं किया जा सकता वो खाने भर के लिए होता था।"

12

हज़ार रुपए तक की आमदनी हो जाती है महिला किसानों को 30 डिसमिल ज़मीन पर सब्ज़ियों की खेती से

08

हज़ार रुपए तक कम से कम बचत कर लेती हैं महिलाएं, तीन से चार हज़ार रुपए तक आती है लागत

'पहले ही व्यापारियों से करते हैं बात'

"जिस दिन सब्जी बेचनी होती है उसके एक दिन पहले दो-तीन थोक बाजारों के व्यापारियों से बात कर लेते हैं जहाँ अच्छा भाव मिलता है वहीं सब्जी ले जाते हैं। एक गाड़ी में भरकर सभी उत्पादक समूह की दीदियों की सब्जी लेकर जाते हैं। सॉर्टिंग और ग्रेडिंग के अनुसार अच्छा भाव मिल जाता है।

परमेश्वर मुंडा, सीनियर आजीविका कृषक मित्र

'खेती से भी बिजनेस हो सकता है ये हमने सोचा नहीं था'

उन्होंने आगे कहा, "खेती से भी कभी बिजनेस हो सकता है ये हमने सोचा नहीं था लेकिन अब तो एक साल से हम 22 दीदी 30-30 डिसमिल जमीन में सब्जियों की खेती कर रहे हैं। पिछले साल हम लोगों ने एक लाख छियालीस हजार साठ रुपए की सब्जी बेची थी।" रजनी उरांव लोहरदगा जिला मुख्यालय से लगभग 20 किलोमीटर दूर कुडु प्रखंड के सुन्दरू पंचायत के सरनाटोला की रहने वाली हैं और मार्च 2018 में बने सुकुमार महिला किसान उत्पादक समूह सरना टोला की सदस्य हैं। उत्पादक समूह की सचिव गीता देवी (35 वर्ष) ने बताया, "सब्जियों की खेती में सबसे बड़ा फायदा ये है कि बुवाई के तीन चार महीने में 30 डिसमिल जमीन में 12,000 रुपए की आमदनी हो जाती है। अगर लागत के तीन चार हजार रुपए निकाल दिए जाएं तो 8000-9000 हजार रुपए की बचत आसानी से हो जाती है।" वो आगे बताती हैं, "खेत में लगने वाली फसल का चयन परियोजना नहीं, बल्कि हम किसान बैठक करके करते हैं। जमीन और पानी के साधन के आलावा बाजार भी देखते हैं कि किस चीज की ज्यादा मांग है। उत्पादक समूह से जुड़ा हर किसान कम से कम 30 डिसमिल जमीन से खेती की शुरुआत जरूर करता है जिससे उसका मुनाफा पता चल सके।"

किसानों को मिलता है तकनीकी सहयोग

जोहार परियोजना के तहत किसानों को टेक्निकल खेती की ट्रेनिंग दी जाती है। जैसे टमाटर के पौधे के साथ किसान डंडी लगाये जिससे टमाटर जमीन पर न रहे। इससे टमाटर की सड़न 15 प्रतिशत तक कम हो जाती है। पौध से पौध की दूरी का किसान ख़ास ध्यान रखें। दो साल में किसानों को इतना भरोसा हो गया है कि बरसात के आलावा भी फसलें उगाई जा सकती हैं। सब्जी एक ऐसी फसल है जिसमें कोई इंश्योरेंस नहीं होता है। शुरुआत में किसान इस डर से खेती करने से कतराते थे लेकिन अब दो साल खेती करने के बाद किसानों को भरोसा हो गया है कि पूरे साल भी सब्जियां उगाई जा सकती हैं।

'दो लाख परिवारों की आय दोगुना करने का लक्ष्य'

झारखंड में जोहार परियोजना के पहलुओं को लेकर परियोजना निदेशक बिपिन बिहारी से ख़ास बातचीत

आजीविका कनेक्शन डेस्क

रांची (झारखंड)। किसानों की आय को दोगुना करने के लिए झारखंड में जोहार परियोजना की शुरुआत की गयी है। इस योजना के तहत उन्नत खेती, पशुपालन, मछलीपालन और लघु वनोपज को बढ़ावा दिया जा रहा है। जोहार परियोजना की शुरुआत वर्ल्ड बैंक, झारखंड सरकार और ग्रामीण विकास विभाग के साझा प्रयास से नवम्बर 2017 में हुई थी। छह साल तक चलने वाली ये योजना झारखंड के 17 जिले के 68 ब्लॉक के दो लाख परिवारों के बीच चल रही है। इसके तहत सखी मंडल से जुड़ी महिलाओं के उत्पादक समूह बनाए जा रहे हैं, जिसमें इन्हें फसल उत्पादन से लेकर बाजार मुहैया कराने में पूरी मदद की जा रही है। इस परियोजना के और क्या-क्या पहलू हैं, ये जानने के लिए हमने जोहार परियोजना के निदेशक बिपिन बिहारी से ख़ास बातचीत की है। **पेश है बातचीत के कुछ अंश...**

सवाल: जोहार परियोजना दूसरी परियोजनाओं से कैसे अलग है?

जवाब: जोहार परियोजना सिर्फ सामुदायिक मोबालाइजेशन पर ही ध्यान नहीं देती, बल्कि महिला किसानों को मार्केट भी मुहैया कराया जा रहा है। जिससे किसानों को उनके उत्पाद का उचित मूल्य मिल सके और बाजार से बिचौलिये खत्म किये जा सकें।

इस परियोजना की कोशिश है कि किसान को बिजनेसमैन बनाया जाए। जिससे एक साधारण किसान ताउम्र किसान न रहकर बिजनेसमैन बन सके। किसानों को उन्नत किस्म की खेती का प्रशिक्षण देकर उनकी आय को दोगुना करने का लक्ष्य है।

झारखंड के किसानों की एक बड़ी समस्या बाजार की है। बिचौलिए इसका फायदा उठाकर जमीन का एक बड़ा हिस्सा खा जाते हैं। जोहार परियोजना के जरिये इस समस्या का हल निकाल लिया गया है। इस योजना के तहत बनाये जाने वाले उत्पादक समूहों को सीधे बाजार से जोड़ा जा रहा है जिससे किसान को उसके उत्पाद का वाजिब दाम मिल सके। जोहार परियोजना का मूल मन्त्र आने वाले छह वर्षों में दो लाख परिवारों की आय को दोगुना करने का लक्ष्य है।

बिपिन बिहारी, निदेशक, जोहार परियोजना

सवाल: वे कौन से घटक हैं जिससे किसानों की आय दोगुनी होने की बात हो रही है?

जवाब: इस परियोजना के मुख्य छह घटक हैं जो एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। पहला है उन्नत खेती, किसान पारंपरिक फसलों के अलावा उन फसलों को करें, जिसमें उत्पादन अच्छा हो। इसमें सब्जियों और सहफसली पर ज्यादा जोर दिया गया है। किसान एक साथ सामूहिक होकर सब्जी, फल और दलहन समेत कई फसलें करें जिसकी बाजार में हमेशा मांग रहती है।

दूसरा है पशुपालन, इस पूरे प्रोजेक्ट में 30-35 प्रतिशत किसानों की आय पशुपालन से बढ़ाने का लक्ष्य रखा गया है। जिसमें छोटे पशुओं पर ज्यादा जोर दिया गया है। मुख्य रूप से बकरी पालन, मुर्गी पालन और सुकर पालन जैसे पारंपरिक आजीविका के संसाधनों को आधुनिक तकनीक से जोड़कर किसानों को प्रशिक्षित किया जा रहा है। जिससे ये अपने छोटे पशुओं को एटीएम के तौर पर देखें और इन्हें जब जरूरत हो ये इसका उपयोग आसानी से कर सकें। तीसरा है मत्स्य पालन, इस परियोजना का ऐसा मानना है कि किसानों की आय बढ़ाने के लिए केवल खेती पर ही निर्भर न रहा जाए, बल्कि दूसरे और माध्यम भी अपनाएं जाएं। इसलिए किसानों को खेती और पशुपालन के साथ-साथ उन्हें मछली पालन के लिए भी प्रेरित किया जा रहा है।

किसान अपने निजी जलाशय, डोभा (छोटे तालाब और गड्ढे जिसमें पानी भरा हो) में मछली पालन करें। जोहार योजना की तरफ से उन्हें बीज, फीड और जाल उपलब्ध कराया जाएगा। प्रशिक्षण के आलावा समय-समय पर मत्स्य मित्र किसानों को किसी भी तरह की असुविधा के लिए मदद भी करेंगे।

चौथा है लघु वनोपज, झारखंड में वनोपज से निकलने वाले उत्पादों को एक बेहतर बाजार मिल सके, इस पर मुख्य रूप से जोर रहेगा। झारखंड में लेमन ग्रास, मुनगा, लाह, इमली, चिरौंजी और तुलसी जैसे वनोपज की भरमार है। इन उत्पादों का सामूहिक एकत्रीकरण, प्रोसेसिंग एवं बाजार भाव पर जोर रहेगा।

पांचवां है सिंचाई के साधन, झारखंड में खेती करने के लिए पानी मुख्य समस्या है। यहाँ की केवल 15 प्रतिशत जमीन ही सिंचित है, जो यहाँ के किसानों की सबसे बड़ी चुनौती है। किसानों को पानी के संसाधन मुहैया कराने के लिए इस परियोजना में 2200 माइक्रो इरीगेशन लगाने का लक्ष्य रखा गया है। इसके आलावा जगह-जगह पर छोटे-छोटे कुएं खुदवाये जा रहे हैं। किसानों को छोटे पम्पिंग मशीन भी दिए जा रहे हैं जिससे उन्हें सिंचाई करने में कोई असुविधा न हो।बरसात में धान की फसल लगाने के बाद झारखंड में जमीन का एक बड़ा हिस्सा खाली पड़ा रहता है। ये परियोजना यहाँ के 17 जिलों में माडल के तौर पर शुरू की गयी है।

छठवां है उत्पादक समूह, इस परियोजना का मुख्य आधार उत्पादक समूह हैं। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी द्वारा जिन महिलाओं को सखी मंडल से जोड़ा गया है वो महिलाएं ही उत्पादक समूह की सदस्य होंगी। इन महिलाओं के 3500 उत्पादक समूह बनाए जायेंगे। अब तक 2100 से ज्यादा उत्पादक समूह बन चुके हैं। पूरे झारखंड में 25 प्रोड्यूसर कम्पनी बनाई जायेंगी। एक कम्पनी में 125 उत्पादक समूह शामिल होंगे। इस हिसाब से लगभग 6000-6500 लोग एक कम्पनी का हिस्सा होंगे। अगर एक व्यक्ति एक हजार रुपए शेयर के तौर पर जमा करता है तो कम्पनी के पास अपने साथ लाख रुपए होंगे। हर कम्पनी को प्रोजेक्ट की तरफ से उतनी ही राशि दी जायेगी जितनी उनके शेयर होल्डर की होगी।

इस हिसाब से एक कम्पनी के पास एक करोड़ बीस लाख रुपए खुद के होंगे, जिससे वो किसी भी तरह का व्यवसाय शुरू कर सकते हैं। चाहें उन्हें कोई प्रोसेसिंग यूनिट लगवानी हो या फिर सामूहिक रूप से कोई और काम शुरू करना हो। कम्पनी को इतना सशक्त बनाया जाएगा जिससे आने वाले दिनों में ये महिला किसानों की कम्पनी किसी पर निर्भर न रहे।

हर एक उत्पादक समूह में आजीविका कृषक मित्र, पशु सखी, मत्स्य मित्र और वनोपज मित्रों को प्रशिक्षित किया जा रहा है जिससे हर उत्पादक समूह से जुड़ी महिलाओं को फसल उगाने से लेकर बाजार तक पहुँचाने के तौर-तरीके सिखाये जा सकें।

सवाल: इस योजना में पशुपालन की कितनी भूमिका है?

जवाब: झारखंड में पानी की किल्लत की वजह से यहाँ के किसानों के लिए खेती करना हमेशा से चुनौती रहा है। ऐसे में ये छोटे पशुओं का पालन करते हैं। जोहार परियोजना में 30-35 प्रतिशत किसानों की आय बढ़ाने की योजना है।

किसानों को अच्छी नस्ल के छोटे पशुओं में बकरी, सुकर, मुर्गी आदि उपलब्ध कराए जा रहे हैं, साथ ही इनकी निगरानी की पूरी जिम्मेदारी उत्पादक समूह की महिलाएं कर रही हैं। नस्ल सुधार के लिए ब्रीडर विलेज बनाये जा रहे हैं। बकरियों को रखने के लिए बकरी शेड और बाड़े बनाये जा रहे हैं उनके खाने-पीने का अच्छा इंतजाम किया जा रहा है।

पशुपालन एक ऐसा व्यवसाय है जिसे हर कोई कर सकता है। झारखंड में ब्लैक बंगाल नस्ल की बकरियों का पालन हो रहा है। एक बकरी एक बार में दो से तीन मेमनों को जन्म दे इस दिशा में नस्ल सुधार का काम भी जोरों पर है।

सवाल: झारखंड में पानी की बहुत किल्लत है, ऐसी परिस्थिति में जोहार परियोजना में किस तरह से सिंचाई पर ध्यान दिया जा रहा है?

जवाब: यहाँ की केवल 15 प्रतिशत जमीन ही सिंचित है बाकी 85 फीसदी जमीन असिंचित है। ये यहाँ के किसानों के लिए एक बड़ी चुनौती है। ऐसे विषम हालातों में यहाँ के किसान जी-तोड़ मेहनत करते हैं, इसके बावजूद बरसात के बाद लाखों एकड़ जमीन खाली पड़ी रहती है।

जोहार परियोजना की अपनी लिमिटेशन है इसलिए हम कुछ हिस्सा ही कवर कर पा रहे हैं। जिस क्षेत्र को कवर कर रहे हैं वहां के किसानों को पानी की पर्याप्त सुविधा मिल सके, इसके लिए 2200 माइक्रो इरीगेशन यूनिट लगवाये जा रहे हैं। एक यूनिट से 25 एकड़ जमीन की सिंचाई होगी। इससे कुल असिंचित जमीन का केवल तीन चार प्रतिशत हिस्सा ही कवर हो पायेगा। इसके अलावा कुएं खुदवाए जा रहे हैं, पम्पिंग सेट दिए जा रहे हैं। इस मॉडल से ऐसी उम्मीद की जा रही है कि दूसरे किसान भी इसे देखकर अपनाएं।

इस पूरी परियोजना में कुल लागत का 10-12 प्रतिशत पैसा किसान खुद लगाता है। उद्देश्य यही है कि किसान की सहभागिता से इस परियोजना को क्रियान्वयन किया जाए।

सवाल: जोहार परियोजना झारखंड की सबसे महत्वपूर्ण परियोजना है, चयनित गाँव को बदलने में इस योजना की क्या भूमिका रहेगी?

जवाब: झारखंड में कुल 32,000 गाँव हैं, प्रोजेक्ट के तहत 3500 गाँव ही लिए गये हैं। प्रोजेक्ट शुरू होने से पहले इन गाँव का बेसलाइन सर्वे हो चुका है। जब छह साल बाद प्रोजेक्ट समाप्त होगा, तब हम पुनः पोस्ट सर्वे करवाएंगे। आंकड़ों से हमें पता चल सकेगा कि इन गाँव में कितना विकास हुआ है।

झारखंड का ये दुर्भाग्य रहा है यहाँ खेती की उतनी आधुनिक तकनीकी अभी तक नहीं पहुंच पाई हैं जितनी की दूसरे राज्यों में हैं। जिसकी वजह से यहाँ के किसान पिछड़ रहे हैं।

इस योजना में इस बात पर खास ध्यान दिया जा रहा है कि किसानों को कृषि के आधुनिक तौर-तरीके सिखाए जाएँ जिससे उनकी लागत न्यूनतम आये और आय में सुधार हो सके। जब किसानों की आय सुधरेगी तो उनका रहन-सहन बदलेगा। वो अपने बच्चों को अच्छे स्कूल में पढ़ा सकेंगे। खान-पान बेहतर होगा जिससे वो स्वस्थ रहेंगे। ऐसे ही धीरे-धीरे गाँव का विकास होगा। अगर इन गाँव को देखकर पांच प्रतिशत भी दूसरे गाँव इसे अपनाएंगे तो एक बड़ा एरिया हम कवर कर सकते हैं।

सवाल: कौशल विकास जोहार परियोजना का महत्वपूर्ण घटक है, इस दिशा में क्या-क्या काम चल रहा है?

जवाब: जब हम ग्रामीण क्षेत्रों में विकास की बात करते हैं तो निश्चित तौर पर वो विकास वहां के स्थानीय लोगों की सहभागिता से ही संभव है। जोहार परियोजना का उद्देश्य है किसानों की आय दोगुना करने के जो भी प्रयास हो रहे हैं उसमें इनकी बराबर की भागीदारी रहे।

इसलिए हर उत्पादक समूह में विभिन्न कैडर कौशल विकास के तहत तैयार किये जा रहे हैं, जो कृषक मित्र, पशु सखी, मत्स्य मित्र, वनोपज मित्र जैसे कई कैडर हैं जो ट्रेंड होकर अपने आसपास के लोगों को खुद जागरुक कर रहे हैं।

हर उत्पादक समूह में कुछ ऐसे सदस्य जरूर हों जो पूरे उत्पादक समूह की हर समस्या का समाधान खुद कर सकें कुछ ऐसा ही प्रयास किया जा रहा है। हर किसी को इतना सशक्त किया जा रहा है जिससे वो बीज खरीद से लेकर उपनी उपज को बाजार तक पहुँचाने का काम खुद कर सके यही इनका कौशल विकास है।

अब उत्पादक समूह की महिलाएं साल भर कर सकेंगी सिंचाई

14
प्रतिशत कृषि योग्य जमीन ही सिंचित है झारखंड में

17
जिले में दो हजार लघु सिंचाई की व्यवस्था की गयी है जोहार परियोजना के तहत

15
से 20 किसान लाभान्वित होते हैं एक सिंचाई के संसाधन से

18000
हेक्टेयर जमीन को सिंचित करना सुनिश्चित किया गया है परियोजना के तहत

फोटोः जेएसएलपीएस

जोहार परियोजना की सिंचाई योजनाओं के लाभ से खेतिहर महिलाएं साल में दो से तीन बार ले रहीं फ़सलें

आजीविका कनेक्शन डेस्क

रांची (झारखंड)। कभी पूरे साल में एक बार ही खेती करने वाले किसान अब जोहार परियोजना के तहत सिंचाई योजनाओं के लाभ से साल में दो से तीन बार फसलें ले रहे हैं।

झारखंड में राज्य का 1.8 मिलियन हेक्टेयर भूमि कृषि योग्य है, जो यहां के भौगोलिक क्षेत्रफल का 22 प्रतिशत है। परांपरिक तौर पर यहां के किसान वर्षा पर आधारित खेती करते हैं। यहाँ सैकड़ों एकड़ खाली पड़ी जमीन ये बताने के लिए काफी हैं कि यहां सालभर में सिर्फ धान की ही खेती हो पाती है।

भरी दोपहरी में खेत में चल रहे पानी की तरफ इशारा करते हुए बंसती देवी (32 वर्ष) बोलीं, "हमारी इतनी उम्र बीत गयी लेकिन हम अपने खेत में साल में एक से दूसरी फसल न लगा पाए। अपने खेत में कभी दूसरी फसल लगा पाएंगे इसकी उम्मीद हमने और यहाँ के लोगों ने छोड़ दी थी।"

वो मुस्कुराते हुए बोलीं, "जोहार परियोजना ने खत्म हो चुकी उम्मीद को पूरा कर दिया। हमारे उत्पादक समूह को सोलर से चलने वाला ये पम्पिंग सेट मिला है। अब उत्पादक समूह की दीदी साल में दो तीन फसल ले पाएंगी।" बंसती देवी हजारीबाग जिला मुख्यालय से लगभग 23 किलोमीटर दूर चुरचू प्रखंड के सरवाहा गाँव की रहने वाली हैं।

'हमें मिला सोलर से चलने वाला पंपिंग सेट'

"जोहार ने हमारी खेती में खत्म हो चुकी उम्मीद को पूरा कर दिया है। हमारे उत्पादक समूह को सोलर से चलने वाला ये पम्पिंग सेट मिला है। अब उत्पादक समूह की दीदी साल में दो से तीन फसल ले पाएंगी।

बसंती देवी (32 वर्ष), सरवाहा गाँव, चुरचू

सिर्फ़ बारिश में ही कर पाते थे धान की खेती

बसंती देवी झारखंड की पहली महिला नहीं हैं जो साल में एक फसल लगाने से चिंतित हों बल्कि यहाँ की लाखों महिलाएं इस समस्या से परेशान है क्योंकि यहाँ की केवल 14 प्रतिशत जमीन ही सिंचित है। जिसकी वजह से यहाँ के किसान केवल बरसात में धान की ही खेती कर पाते थे। पानी के साधन न होने की वजह से अक्सर धान की खेती के बाद यहां के लोग पलायन कर जाते हैं। पानी के संसाधन न होना यहाँ के किसानों के लिए हमेशा से चिंता का विषय रहा है। बारिश का पानी संचित नहीं किया जाता और सिंचाई की कोई मूलभूत सुविधा नहीं होने की वजह से किसानों के खेत खाली पड़े रहते थे। ऐसी परिस्थिति में झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी ने जोहार परियोजना के तहत झारखंड के विभिन्न जिलों में किसानों के खेतों तक पानी पहुंचाने के लिए लघु-स्तरीय सिंचाई योजना के तहत कार्य करना शुरू किया है। जोहार परियोजना ने इन महिलाओं में उम्मीद की एक किरण जगाई है। इस परियोजना के तहत हर एक उत्पादक समूह को लघु स्तरीय सिंचाई के साधन उपलब्ध कराए जा रहे हैं। लघु स्तरीय सिंचाई के संसाधनों पर महिलाओं का नियंत्रण होगा। जरूरत के अनुसार वे अपने खेतों में सिंचाई कर सकेंगी।

महिलाओं को मिलता है मालिक़ाना हक़

सिंचाई के इन संसाधनों पर उत्पादक समूह की महिलाओं का मालिकाना हक रहेगा। राज्य के 17 जिले के 39 प्रखंड में दो हजार लघु सिंचाई की व्यवस्था की गयी है, जिससे 18,000 हेक्टेयर जमीन को सिंचित करना सुनिश्चित किया गया है और इसकी पूरी बागडोर महिलाओं के हाथों होगी। झारखंड में जोहार के द्वारा लगने वाले लघुस्तरीय सिंचाई के संसाधनों से यहाँ के किसानों का बड़े स्तर पर जीवन बदलेगा। एक इरीगेशन यूनिट से 15 से 20 किसान लाभान्वित होंगे। जिन खेतों में सिर्फ बारिश के दिनों में धान उगाया जाता था अब उन खेतों में किसान अब साल में दो से तीन फसलें ले सकेंगे। जिससे उत्पादक समूह से जुड़ी महिलाओं की आमदनी बढ़ेगी और उनकी आजीविका सशक्त होगी।

आजीविका कृषक मित्र की होती है अहम भूमिका

इस लघुस्तरीय सिंचाई योजना का लाभ जमीनी स्तर पर लोगों तक पहुंचाने के लिए उत्पादक समूह में जुड़े आजीविका कृषक मित्र और सीनियर आजीविका कृषक मित्र की भूमिका अहम होती है। कृषक मित्र सर्वे के बाद उत्पादक समूह की महिलाओं की सहमति लेते हैं कि किस जमीन पर इरीगेशन लगाना है। सर्वे के बाद इन महिला किसानों का सबसे पहला काम पैच सेलेक्ट करना होता है। पैच सेलेक्शन का अर्थ है ऐसे जगह का चुनाव करना जहां पर प्राकृतिक-तौर पर पानी की उपलब्धता हो और वहां से आसानी से सबके खेतों तक पानी पहुंचाया जा सके। इस तरह से ये महिला किसान अपने खेतों में कम से कम तीन पैच सेलेक्ट करती हैं।

उत्पादक समूह की होती है पूरी ज़िम्मेदारी

दूसरी प्रक्रिया है इंजीनियर द्वारा निर्धारित पैच की जांच करना। महिला किसानों द्वारा सेलेक्ट किये गये सभी पैचों को इंजीनियर टेक्निकल तौर पर जांच करता है और उसे जो पैच सबसे उचित लगता है वहां कुएं के निर्माण के लिए निशान लगवाता है।

इंजीनियर द्वारा फाइनल पैच निर्धारित करने के बाद उस जगह का सर्वे किया जाता है। इस सर्वे में जमीन की स्थिति, ऊंचाई और कुआं निर्माण से लेकर खेतों तक पानी पहुंचाने के लिए पानी लाइन की पूरी विस्तृत रिपोर्ट तैयार की जाती है।

इस रिपोर्ट को उत्पादक समूह की सभी महिलाओं के सामने पढ़ा जाता है। सबकी सहमति के बाद काम आगे बढ़ता है। इरीगेशन लगवाने की पूरी जिम्मेदारी उत्पादक समूह की होती है। जोहार के तरफ से इंजीनियरिंग मदद दी जाती है। इरीगेशन लगने के शुरुआती दौर से लेकर उसके समापन तक का भुगतान उत्पादक समूह द्वारा ही किया जाता है। जिन किसानों की जमीन लघु सिंचाई के क्षेत्र में नहीं आती है और वो खेती करते हैं, ऐसे किसानों को साइकिल संचालित सोलर पम्पिंग सेट दिया जा रहा है।

उत्पादक समूह को चार तरह से दिया जा रहा लाभ

1. डीजल आधारित सिंचाई
2. बिजली आधारित सिंचाई
3. सोलर संचालित सिंचाई
4. गुरुत्वाकर्षण सिंचाई

महिलाओं को सर्टिफिकेट

फार्मर प्रोड्यूसर कम्पनी की बोर्ड मेम्बर और बड़ी कम्पनियों के साथ बैठक के बाद महिलाओं को सर्टिफिकेट देते हुए जोहार परियोजना के निदेशक बिपिन बिहारी। फोटोः जेएसएलपीएस

जोहार से किसानों को मिल रहा बड़ा बाज़ार

आजीविका कनेक्शन डेस्क

रांची। किसान सीधे बाजार से जुड़े और बड़ी कम्पनियां किसानों के उत्पाद को उचित मूल्य पर खरीदें, इस दिशा में जोहार परियोजना की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस परियोजना में सखी मंडल की महिलाओं को उत्पादक समूह से जोड़ा जा रहा है।

उत्पादक समूह के ऊपर की संस्था उत्पादक कंपनी का गठन किया जा रहा है ताकि इनका संचालन सुचारू रूप से हो सके। पूरे प्रोजेक्ट में कुल 20 कम्पनियां बननी हैं अब तक 11 कम्पनी बन चुकी हैं। एक कम्पनी में 8000-10,000 किसान शेयर होल्डर्स होंगे। हर किसान को कम्पनी में 1000 रुपए अंश पूंजी देनी होती है। परियोजना का उद्देश्य है महिला किसानों में इतना क्षमतावर्धन करना जिससे वो अपने उत्पाद बड़ी कम्पनियों जैसे रिलायंस, बिग बाजार को बेचने में सक्षम हो सकें। इस कम्पनी की मालिक महिला किसान होंगी। पिछले महीने खूंटी जिले की मुरहू नारी शक्ति किसान प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड ने रिलायंस और बिग बाजार को लगभग 17 लाख रुपए का व्यापार किया। ये कम्पनियां बीज और खाद की कम्पनियों से सीधे हजारों किसानों का एक साथ बीज और खाद खरीदेंगी, जिससे किसानों को कम दाम पर बीज-खाद मिलेगा। यही कम्पनियां सभी किसानों के उत्पाद सामूहिक रूप से एकत्रित करके बाजार पहुंचाएंगी जिससे किसानों को घर बैठे उनके उत्पादों का उचित मूल्य मिलेगा।

खूंटी जिले के मुरहू प्रखंड में सीनियर आजीविका कृषक मित्र की देखरेख में तरबूज एकत्रित करती उत्पादक समूह की महिलाएं।

खूंटी जिले की फार्मर प्रोड्यूसर कम्पनी द्वारा किसानों से एकत्रित तरबूज को बाजार पहुंचाने की तैयारी करतीं महिलाएं।

किसानों की उपज

रांची और बेड़ो प्रखंड में उत्पादक समूह की महिलाएं सामूहिक रूप से मटर एकत्रित करती हुईं।

भंडारण

गुमला के पालकोट की महिलाएं रूरल बिजनेस हब सेंटर पर इमली का भंडारण करते हुए।

मुर्गी का बाज़ार

क्रायल रंगीन मुर्गी का बाजार कर रहीं खूंटी जिले की ग्रामीण महिलाएं।

टमाटरों की पैकिंग

रामगढ़ जिले के गोला प्रखंड में सीनियर आजीविका कृषक मित्र की देखरेख में टमाटर पैक करतीं उत्पादक समूह की महिलाएं।

पशुओं की वर्ष के 12 महीने ऐसे करें देखरेख

आजीविका कनेक्शन डेस्क

रांची। पशुपालक पूरे साल छोटे पशुओं की कैसे देखरेख करें, जिससे उनके पशु स्वस्थ रहें और उन्हें अच्छा मुनाफा मिल सके, इसके लिए पशुपालकों को पूरे साल हर महीने के हिसाब से कैलेंडर के अनुसार मुख्य बातों का ध्यान रखना होगा। बकरी और सुकर पालन के लिए हर महीने बकरी और सुकर बाड़े की साफ़-सफाई रखनी होगी। हर महीने की जन्म और मृत्यु दर को कहीं नोट करके रखना होगा, जिससे पशुपालक साल के अंत में पशुओं का हिसाब-किताब आसानी से रख सकें। नये जन्मे मेमनों की नाभी में आयोडीन लगाना जरूरी है। मेमनों का बधियाकरण नियमित तौर पर होते रहना है। इसी तरह सुकर के शावकों को जन्म के समय नाभी में आयोडीन लगाना जरूरी है। चार दिन और चौहदवां दिन होने पर आयरन का टीका जरूर लगवा लें। पीपीआर का टीका सभी बकरियों को तीन वर्ष में कम से कम एक बार लगाना बहुत जरूरी है। मेमनों में पहला टीका तीन महीने बाद और बूस्टर 15 दिनों बाद लगा लेना चाहिए। दो से तीन महीने की गाभिन बकरी को रोजाना 150-200 ग्राम दाना देना जरूरी है। बकरी और सुकर का तैयार माल को बाजार में बेच दें। छोटे पशुओं में रोगों की रोकथाम के लिए मिनरल पाउडर, टीका और कृमि की दवा समय से देना जरूरी है। जबकि उम्र के अनुसार अभी पशुओं को अनाज का मिश्रण आहार में दें। वहीं मुर्गी पालन के लिए हर महीने मदर यूनिट की साफ-सफाई करके नये चूजे हर महीने डालें। हर महीने मृत्यु चूजों की संख्या दर्ज करें। मुर्गी का तैयार माल बाजार में बेच दें।

पूरे साल छोटे पशुओं की कैसे देखरेख करें ताकि पशु स्वस्थ रहे और पशुपालकों को अच्छा मुनाफा मिले, इसके लिए कैलेंडर की मुख्य बातों का रखें ध्यान

जनवरी का कैलेंडर

(सर्दी का मौसम, तापमान 5-16 डिग्री, सर्दी व पाला का समय, घास, पेड़ों के पत्ते एवं कृषि उत्पाद उपलब्ध)

बकरी व सुकर पालन के मुख्य कार्य

- साल की पहली कृमि दवा सभी पशुओं को दें।
- पशुओं को ठंड से बचाएं।
- बकरी के बाड़े को चारों तरफ से ढक दें जिससे ठंडी हवा अन्दर न जा सके। मचान वाले घरों में पुआल डालें। बाड़े में आग न जलाएं, न ही धुआँ होने दें, इससे सांस की बीमारियाँ ज्यादा होती हैं।
- छोटे बच्चों को जूट के बोरे से ढक दें। सहजन एवं सुबबूल की पत्तियां खिलाएं। पशुओं को संतुलित आहार व मिनरल अवश्य दें। आहार में खली की मात्रा भी रहे।

मुर्गी पालन के मुख्य कार्य

- इस समय मुर्गियों को कृमि दवा खिलाएं।
- मुर्गियों को ठंड से बचाएं।
- मुर्गी शेड सूखा एवं गर्म रखें। इस मौसम में अण्डों का उत्पादन कम हो जाता है। बकरी एवं सुकरों में ये मौसम कृमि दवा देने का है।

फरवरी का कैलेंडर

(सर्दी के मौसम का अंत गर्मी के मौसम का आरंभ, तापमान- 10-20 डिग्री)

बकरी व सुकर पालन के मुख्य कार्य

- बचे हुए पशुओं को कृमि की दवा खिला दें। इन्हें ठंड से बचाएं। इस महीने में शावकों की मृत्यु अधिक होती है।
- फरवरी महीने में वर्षा होने से ठंड बढ़ जाती है और घर में नमी बढ़ने से निमोनिया का प्रकोप बढ़ जाता है। इस महीने मुनगा एवं सुबबूल की पत्तियां खिलाएं।
- पशुओं को संतुलित आहार व मिनरल जरूर दें। पशुओं को आहार में खली की भी मात्रा दें।
- कम आहार देने से बकरी व सुकर माताओं का दूध कम हो जाता है। शावकों को सही आहार न मिलने से वो कमजोर हो जाते हैं और उनकी मृत्यु का डर रहता है।
- इस माह के अंत में प्रजनन योग्य बकरियां गर्मी में आने लगती है। इसलिए मिलन के लिए अच्छे नर बकरे का होना जरूरी है।
- इस माह शावकों का जन्म भी होता है इसलिए आयोडीन एवं विटामिन–ए की खुराक देना जरूरी है।
- इस समय मुर्गियों को कृमि की दवा खिलाएं।

मुर्गी पालन के मुख्य कार्य

- मुर्गी शेड को सूखा एवं गर्म रखें।
- इस मौसम में अंडे का उत्पादन कम हो जाता है।
- ये बकरी एवं सुकरों के प्रजनन का मौसम है।

मार्च का कैलेंडर

(गर्मी के मौसम का आरंभ, तापमान-20-35 डिग्री, गर्मी की शुरुआत)

बकरी व सुकर पालन के मुख्य कार्य

- इस समय मौसम में बदलाव होता है। गर्मी बढ़ने से पशुओं में तनाव होता है, ऐसे में पशुओं को साफ़ व छायादार स्थान पर रखें।
- इस माह में होली का त्यौहार होने से तैयार माल का अच्छा दाम मिलता है।
- इस माह में शावकों का जन्म भी होता है, इन्हें आयोडीन एवं विटामिन–ए की खुराक देना जरूरी है।
- बकरी के बाड़े को वर्षा के लिए मरम्मत करें। इसे हवादार बनाएं व साफ़ रखें।
- इस समय बाड़े में मच्छर मक्खियों का प्रकोप बढ़ जाता है, ऐसे में बाड़े की सफाई करने के लिए फिनायल का इस्तेमाल करें।
- बाड़े में 24 घंटे साफ़ पानी रखें। मुनगा एवं सुबबूल की पत्तियां खिलाएं।
- पशुओं को संतुलित आहार और मिनरल जरूर दें।
- इस माह प्रजनन योग्य बकरियां आने लगती हैं इसलिए अच्छे नर बकरे का होना जरूरी है।
- ये माह बकरी एवं सुकरों के प्रजनन का मौसम है।

मुर्गी पालन के मुख्य कार्य

- मुर्गियों में चेचक का टीका लगाएं।
- मुर्गी शेड सूखा एवं हवादार रखें।
- इस समय मुर्गियों में रानी खेत रोग होने की संभावना रहती है इसलिए रोग के संक्रमण का ध्यान रखें।

जून का कैलेंडर

(गर्मी एवं वर्षा का मौसम आरंभ, तापमान- 28-38 डिग्री, घास, पेड़ों के पत्ते एवं कृषि उत्पाद उपलब्ध नहीं होंगे।)

बकरी व सुकर पालन के मुख्य कार्य

- बचे हुए पशुओं को कृमि की दवा खिला दें।
- पशुओं में गर्मी के कारण शरीर में पानी की कमी हो जाती है इसलिए पर्याप्त मात्रा में पशुओं को साफ़ व ठंडा पानी पिलाएं।
- बकरी बाड़ा को वर्षा के लिए मरम्मत करें। इसे हवादार बनाएं व साफ़ रखें।
- सुकरों को कम से कम दो बार पानी से स्नान कराएं।
- बाड़े में 24 घंटे पानी रखें।
- लगाई गई चारा की नर्सरी को खेतों में लगवाएं।
- खाने में अनाज की मात्रा कम दें।
- गर्मी से पशुओं में तनाव का मौसम रहता है। बकरी और सुकर को खाने वाला चारा और पेड़ लगवाएं।

मुर्गी पालन के मुख्य कार्य

- इस समय मुर्गियों में रानी खेत बीमारी होती है और वह बहुत ही तेजी से फैलती है।
- मुर्गी शेड सूखा एवं हवादार रखें।
- इस समय मुर्गियों में पानी से होने वाली बीमारियों की सम्भावना रहती है जैसे लाल दस्त व सफेद दस्त।

जुलाई का कैलेंडर

(गर्मी एवं वर्षा का मौसम, तापमान-25-32 डिग्री, घास, पेड़ों के पत्ते एवं कृषि उत्पाद उपलब्ध रहेंगे)

बकरी व सुकर पालन के मुख्य कार्य

- इस माह में पशुओं में किसी प्रकार का टीका और कृमि दवा न करें।
- किसी प्रकार के नये पशु को बाजार से न खरीदें, लेकिन इस दौरान बिक्री कर सकते हैं।
- इस समय पीपीआर और ईटी रोग होता है इसलिए वर्षा से पहले इन रोगों का टीका लग जाना चाहिए।
- इस दौरान सड़ा गला खाने से बहुत सी बीमारियाँ हो सकती हैं। इस बात का खास ध्यान रखें।
- बकरी के बाड़े को वर्षा के लिए मरम्मत करें। उसे हवादार व साफ़ रखें। इस समय बाड़े के अन्दर ही इनके खाने का इंतजाम करें।
- बाड़े के अन्दर पानी इकट्ठा न होने दें। ऐसा करने से मच्छर नहीं पनपेंगे।
- गाभिन बकरी के लिए इस समय जो दाना खिला रहे हैं उसका ध्यान रखें क्योंकि उसमें इस महीने फफूंदी लगने की सम्भावना रहती है।
- जहाँ चारा लगाया गया है उस चारे की देखभाल करें और उसके आसपास के घास को साफ़ कर दें।
- ये महीना कृमि एवं रोग संक्रमण का मौसम है इसलिए नदी नाले के पास घास न चराएँ, सड़ा गला न खाने दें, वर्षा के तनाव से बचाएं।

मुर्गी पालन के मुख्य कार्य

- फफूंद रहित दाना एवं साफ़ पानी पिलाएं।
- सड़ा गला खाने से बहुत सी बीमारियाँ हो सकती हैं इस बात का खास ध्यान रखें।
- मुर्गी शेड को सूखा रखें, रात के समय 100 वाट के बल्ब से रोशनी करें।
- इस समय मुर्गियों में पानी से होने वाली बीमारियाँ होने की सम्भावना रहती है जैसे लाल दस्त, सफेद दस्त।

अगस्त का कैलेंडर

(गर्मी, उमस एवं वर्षा का मौसम, तापमान- 25 से 32 डिग्री, घास, पेड़ों के पत्ते कृषि उत्पाद लगभग न के बराबर उपलब्ध)

बकरी व सुकर पालन के मुख्य कार्य

- इस माह किसी प्रकार का टीका कृमि दवा न करें।
- किसी प्रकार के नये पशु को न खरीदें लेकिन बिक्री कर सकते हैं।
- इस समय पीपीआर और ईटीरोग होता है इसलिए वर्षा से पहले इन रोगों का टीका लग जाना जरूरी है।
- सड़ा गला खाने से बहुत सी बीमारियाँ हो सकती है इस बात का पशुपालक ध्यान रखें।
- बकरी के बाड़े को वर्षा के लिए मरम्मत करें। हवादार व साफ़ रखें। इस समय बाड़े के अन्दर ही इनके खाने की व्यवस्था करें।
- बाड़े के अन्दर पानी न भरने दें।
- दो से तीन महीने की गाभिन बकरी को 150–200 ग्राम दाना दें। इस महीने दाने में फफूंद होने की सम्भावना रहती है इस बात का ध्यान रखें।
- लगाये गये चारा की देखभाल करें और उसके आसपास के घास को साफ़ रखें।
- मिनरल पाउडर खिलाएं, बचे हुए बकरियों को टीका लगवाएं।

मुर्गी पालन के मुख्य कार्य

- फफूंद रहित दाना एवं साफ़ पानी पिलाएं।
- सड़ा गला खिलाने से बहुत सी बीमारियाँ हो सकती है।
- मुर्गी शेड को सूखा रखना, रात के समय 100 वाट के बल्ब से रोशनी करें।
- इस समय मुर्गियों में पानी से होने वाली बीमारियाँ होने की सम्भावना रहती है जैसे लाल दस्त, सफेद दस्त।

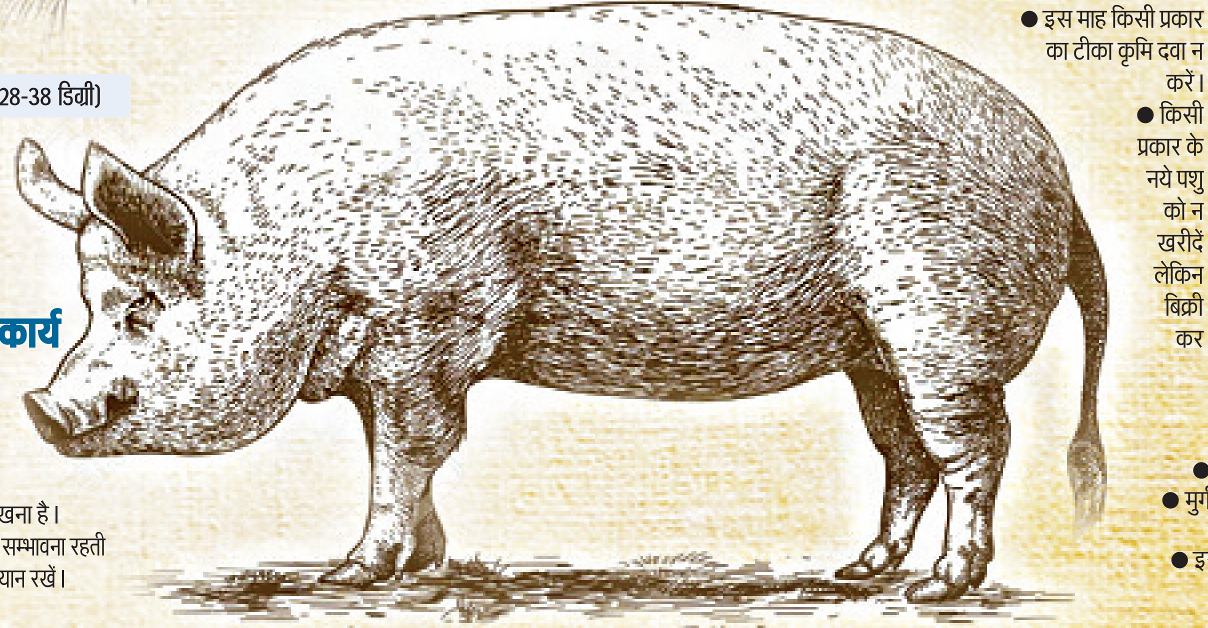

अप्रैल का कैलेंडर

(गर्मी का मौसम, तापमान- 28-38 डिग्री)

बकरी व सुकर पालन के मुख्य कार्य

- पशुओं को कृमि की दवा खिला दें। जिन बकरियों का कृमि करण हो गया है, उन्हें पीपीआर व ईटी का टीका लगवा दें।
- गर्मी के कारण पर्याप्त मात्रा में पशुओं को साफ़ व ठंडा पानी दें।
- बकरी बाड़ा को वर्षा के लिए मरम्मत करें, इसे साफ़ व हवादार बनाएं।
- सुकरों को कम से कम दो बार पानी से स्नान करवा दें।
- बाड़े में 24 घंटे पानी रखें।
- चारा उत्पादन में इस समय सुबबूल और मुनगा की नर्सरी तैयार करें।
- पशुओं को संतुलित आहार व मिनरल अवश्य दें।

मुर्गी पालन के मुख्य कार्य

- इस समय मुर्गियों को कृमि की दवा खिलाएं।
- मुर्गियों में चेचक का टीका लगवाएं।
- मुर्गी शेड सूखा एवं हवादार रखना है।
- मुर्गियों में रानी खेत रोग होने की सम्भावना रहती है इसलिए रोग के संक्रमण का ध्यान रखें।

मई का कैलेंडर

(गर्मी का मौसम, तापमान-28-40 डिग्री, इस समय घास, पेड़ों के पत्ते एवं कृषि उत्पाद उपलब्ध नहीं होंगे।)

बकरी व सुकर पालन के मुख्य कार्य

- बचे हुए पशुओं को कृमि की दवा खिला दें। जिन बकरियों का कृमिकरण हो गया है उन्हें पीपीआर व ईटी का टीका लगवा दें।
- टीका सुबह आठ बजे तक ही लगवाएं।
- गर्मी के कारण शरीर में पानी की कमी हो जाती है इसलिए पर्याप्त मात्रा में पशुओं को साफ़ व ठंडा पानी दें।
- बकरी बाड़ा को वर्षा के लिए मरम्मत करें। हवादार बनाएं व साफ़ रखें।
- गर्मी की वजह से इस माह सुकरों को कम से कम दो बार पानी से स्नान करवाएं।
- बाड़े में 24 घंटे पानी रखें।
- इस समय मुर्गा सुबबूल की नर्सरी लगवाएं।
- किसान हाइब्रिड नैपियर घास की खेती भी कर सकते हैं।
- पशुओं को संतुलित आहार व मिनरल जरूर दें।
- गर्मियों में पशुओं में तनाव का मौसम रहता है।

मुर्गी पालन के मुख्य कार्य

- इस समय मुर्गियों को रानी खेत का टीका लगवा दें।
- मुर्गी शेड सूखा एवं हवादार रखें। इस समय मुर्गियों में रानी खेत होने की सम्भावना रहती है इसलिए रोग के संक्रमण का खास ध्यान रखें।

सितंबर का कैलेंडर

(हल्की सर्दी का मौसम, तापमान- 24 से 32 डिग्री, कम वर्षा, घास, पेड़ के पत्ते कृषि उत्पाद उपलब्ध)

बकरी व सुकर पालन के मुख्य कार्य

- किसी प्रकार के पशु को न खरीदें लेकिन बिक्री कर सकते हैं।
- इस महीने के अंत में वर्षा कम हो जाने पर तुरंत कृमि की दवा खिलाएं।
- बाड़े को हवादार रखने की कोशिश करें जिससे उमस कम हो।
- बकरी बाड़ा में वर्षा का पानी, मूत्र गोबर आदि को साफ़ रखें।
- पशुओं को नदी नालों के पास न चराएं। इससे कृमि होती है। पेड़ के पत्ते शेड या बाड़े में टांगकर खिलाएं।
- इस माह के बाद से मादा बकरियों का गर्मी में आना शुरू होता है उन्हें 50–100 ग्राम दाना रोजाना दें।

मुर्गी पालन के मुख्य कार्य

- इस माह कृमि की दवा खिलाएं।
- कृमि खिलाने के 15 दिन बाद रानीखेत बीमारी का टीका लगाएं।
- मुर्गी शेड को सूखा रखना रात के समय 100 वाट के बल्ब से रोशनी करें।
- इस समय मुर्गियों में पानी से होने वाली बीमारियाँ होने की सम्भावना रहती है जैसे लाल दस्त, सफेद दस्त।

अक्टूबर का कैलेंडर

(सर्दी का मौसम आरम्भ, तापमान- 14 से 32 डिग्री, वर्षा न के बराबर, कम घास, पेड़ों के पत्ते एवं कृषि उत्पाद उपलब्ध)

बकरी व सुकर पालन के मुख्य कार्य

- पशु को खरीदा जा सकता है लेकिन शुरू के 15 दिनों के लिए नये पशुओं को अलग रखें।
- बकरियों को पीपीआर का टीका लगवाएं।
- सुकरों में स्वाइन फीवर का टीका लगवाएं।
- बाड़े को हवादार एवं रात में गर्म रखने की व्यवस्था करें जिससे उमस कम हो।
- बरसीम लगाने की तैयारी करें।
- मिनरल पाउडर खिलाएं। इस माह सभी बकरियों को कृमि की दवा खिलाएं।

मुर्गी पालन के मुख्य कार्य

- इस महीने खस्सी की मांग बढ़ जाती है इसलिए बाजार को देखते हुए खस्सी को बेचें।
- इस महीने बहुत से मेमनों का जन्म होता है. इसलिए मेमनों की मृत्यु पर ध्यान दें।
- मादा बकरियों का गर्मी में आने के लिए 100 ग्राम दाना ज्यादा खिलाएं।

नवंबर का कैलेंडर

(कम गर्मी का मौसम और सर्दी की शुरुआत, तापमान- 14 से 29 डिग्री, वर्षा न के बराबर, घास, पेड़ों के पत्ते एवं वर्षा उत्पाद उपलब्ध हो जाते हैं।)

बकरी व सुकर पालन के मुख्य कार्य

- इस महीने बचे हुए बकरियों को पीपीआर का टीका ईटी का टीका सुकरों को सीएसएफ का टीका लगाया जा सकता है।
- एफएमडी का टीका इस माह के अंत तक लगवाएं।
- त्यौहारों के मौसम के कारण बिक्री पर प्राथमिकता दें।
- बाड़े को साफ़ सूखा और गर्म करने की व्यवस्था करें।
- बाड़े के अन्दर पुआल व पुराना जूट का बस्ता रखें।
- बरसीम की खेती की तैयारी करें। इस समय चारा पेड़ों से पत्तों को खिलाएं। गिरा चारा न खिलाएं।
- यह महीना बकरियों के प्रजनन का उत्तम समय होता है पिछले महीने में गाभिन हुई बकरियों को अलग बाधें।

मुर्गी पालन के मुख्य कार्य

- मुर्गी शेड को सूखा रखना, रात के समय 100 वाट के बल्ब से रोशनी करें।
- इस समय मुर्गियों के आहार में अनाज को बढ़ा दें।
- ये मौसम अच्छे नस्ल के बकरा बकरी को खरीदने का है।

दिसंबर का कैलेंडर

(सर्दी का मौसम, तापमान-9 से 20 डिग्री, वर्षा न के बराबर, घास, पेड़ों के पत्ते कृषि उत्पाद लगभग न के बराबर उपलब्ध)

बकरी व सुकर पालन के मुख्य कार्य

- इस समय पशुओं को ठंड लगने से मरने की सम्भावना रहती है इसलिए शाम को जल्दी बाड़े के अन्दर कर दें। ठंडी हवाओं से इन्हें बचाएं।
- त्यौहारों के मौसम के कारण बिक्री को प्राथमिकता दें।
- बाड़े को साफ़ एवं गर्म रखने की व्यवस्था करें।
- घर के अन्दर पुआल व पुराना जूट का बस्ता रखें।
- बरसीम की खेती की देखभाल करें, हरा चारा को सुखाकर रख लें।
- बकरी के आहार की मात्रा बढ़ा लें।

मुर्गी पालन के मुख्य कार्य

- इस माह में देसी मुर्गियों को कृमि की दवा खिलाएं।
- कृमि की दवा खिलाने के 15 दिनों के बाद रानी खेत का टीका लगवाएं।
- इस समय बाजार में इसकी अच्छी मांग रहती है।
- मुर्गी शेड को सूखा रखें, रात के समय 100 वाट के बल्ब से रोशनी करें।
- इस समय मुर्गियों के आहार में अनाज बढ़ा दें।

ब्रीडर विलेज में चल रहा नस्ल सुधार का काम

150
घर सलैया गाँव में हैं। यहाँ लगभग हर घर में दो चार बकरियां जरूर हैं, पर लकी उत्पादक समूह से जुड़ी 50 महिलाओं के पास कम से कम 10 बकरी और एक बकरा जरूर मिलेगा।

फोटोः जेएसएलपीएस

अगर आपको बकरी पालन करके अच्छा मुनाफ़ा कमाना है तो उत्पादक समूह की इन महिलाओं से जरूर मिलिए

आजीविका कनेक्शन डेस्क

लोहरदगा (झारखंड)। आदिवासी बाहुल्य झारखंड के तहर घर में मुर्गियां और बकरियां पाली जाती हैं। ये छोटे पशु यहाँ की महिलाओं के आर्थिक लड़ाई के साथी हैं।

राज्य में जोहार परियोजना के तहत बकरियों की नस्ल सुधार के लिए ब्रीडर विलेज बनाए जा रहे हैं, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को और मजबूत किया जा सके।

दो चार बकरियों का पालन करने वाली मुन्नी उरांव (27 वर्ष) के पास आज ब्लैक बंगाल नस्ल की 20 बकरियां हैं। एक बकरी का हर दिन कितना आहार हो और उनके रहने की क्या व्यवस्था हो, इस बात का मुन्नी पूरा ध्यान रखती हैं।

सलैया गाँव की 50 महिलाएं पशु सखी मुन्नी की देखरेख में बेहतर तरीके से बकरी पालन कर रहीं हैं। इस गाँव में बकरी के बाड़े से लेकर उनके लिए हवादार शेड तक का पूरा इंतजाम किया गया है।

बांस से घिरे बाड़े में हरे पत्ते खा रही बकरियों की तरफ इशारा करते हुए मुन्नी बताती हैं, "दिन में इन्हें इसी बाड़े में रखते हैं। जंगल से चराने के बाद कुछ हरे पत्तों की डाल को ऐसे ही ऊपर से बांस में फंसा देते हैं जिसे ये उछल-उछल कर खाती रहती हैं। इससे इनकी पाचन क्रिया अच्छी रहती है।"

उन्होंने बाड़े में रखे पानी के बारे में बताया, "गर्मी के दिन शुरू हो गये हैं, जब ये जंगल से चरकर आती हैं तब पानी पिलाते हैं, लेकिन एक बर्तन में पानी भरकर भी रख देते हैं, जिससे इन्हें जब प्यास लगे ये पानी पी सकें।" इन बकरियों को सादा पानी नहीं पिलाया जाता। इन्हें माड़ पानी और मिनरल पाउडर मिलाकर पानी पिलाया जाता है जिससे इनका शारीरिक विकास अच्छा हो सके।

इस गाँव में बांस के बकरी शेड बने हुए हैं, जिसमें रात में बकरियां सोती हैं और दिन में बांस से बने बाड़े में रहती हैं। बकरियों के रहने-खाने का यहाँ के पशुपालक खास ध्यान रखते हैं। जोहार परियोजना के तहत इस सलैया गाँव को ब्रीडर विलेज चुना गया है, जिसमें उन्नत तरीके से बकरा प्रजनन और नस्ल सुधार पर खास काम किया जा रहा है।

इस गाँव की तरह 24 ब्लॉक के 24 गाँव को ब्रीडर विलेज बनाया जा रहा है। एक ब्रीडर विलेज में उन्नत नस्ल से जन्मे बकरे उस पूरे ब्लॉक के उन गाँव में जाएंगे, जहाँ पर उत्पादक समूह की महिलाएं बकरी पालन कर रही हैं।

लोहरदगा जिला मुख्यालय से लगभग 20 कि.मी. दूर किस्को प्रखंड के पाखर पंचायत के सलैया गाँव में 150 घर हैं। यहाँ लगभग हर घर में दो चार बकरियां जरूर हैं, पर लकी उत्पादक समूह से जुड़ी 50 महिलाओं के पास कम से कम 10 बकरी और एक बकरा जरूर मिलेगा। परियोजना के तहत प्रति महिला आठ बकरी और एक बकरे की राशि दी जाती है और उस महिला के पास दो बकरी पहले से होनी चाहिए।

अभी राज्य के 24 ब्लॉक को ब्रीडर विलेज बनाने पर काम चल रहा है। इन ब्रीडर विलेज को नस्ल सुधार बकरा प्रजनन को राज्य में मॉडल के तौर पर प्रस्तुत किया जाएगा।

लकी उत्पादक समूह की कोषाध्यक्ष उषा उरांव (25 वर्ष) बताती हैं, "पहले हमारे पास न तो बकरी शेड था और न ही बाड़ा। हम बकरियों को ऐसे ही कहीं भी बांध देते थे। बकरियों को भी खास देखरेख की जरूरत होती है, ऐसा हमने सोचा नहीं था।" वो आगे बताती हैं, "लेकिन अब बकरी को खाने में भरपूर पोषक तत्व देते हैं। इन्हें माड़ पानी में मिनरल पाउडर मिलाकार पिलाते हैं। अजोला खिलाते हैं जिससे इनका अच्छा विकास होता है।"

जोहार परियोजना राज्य की एक महत्वपूर्ण योजना है, जिसमें किसानों की छह साल में आय को दोगुना करने का लक्ष्य है। इसमें छोटे पशुपालन की महत्वपूर्ण भूमिका है क्योंकि छोटे पशुओं का यहाँ के लोग बहुत ही आसानी से पालन कर सकते हैं।

इस परियोजना के तहत उत्पादक समूह बनाये जा रहे हैं जिसमें सखी मंडल की महिलाओं को जोड़ा जा रहा है। इन महिलाओं को सामूहिक रूप से हर महीने गाँव में ही किसान पाठशाला लगाई जाती है, साथ ही हर उत्पादक समूह में एक पशु सखी होती है जो अपने गाँव में सभी छोटे पशुओं की देखरेख करती है।

जंगल से बकरी चराकर लौट रही बालो उराँव (22 वर्ष) ने बताया, "हर दिन सुबह आठ नौ बजे जंगल बकरी लेकर चले जाते हैं और दोपहर के 11-12 बजे वापस बाड़े में छोड़ देते हैं। पानी पिलाकर ये दो-तीन घंटे आराम करती हैं और फिर दो-तीन बजे जंगल लेकर चले जाते हैं। शाम पांच बजे वापस ले आते हैं। जंगल के आलावा इन्हें सुबह नाश्ते में दाना खिलाते हैं।"

उत्पादक समूह में वही महिलाएं जुड़ सकती हैं जो सखी मंडल की सदस्य हों। उत्पादक समूह में जुड़ने के लिए 100 रुपये प्रति महिला सदस्यता शुल्क और 1000 रुपये अंश पूंजी जमा करनी होती है।

ऐसे होता है ब्रीडर विलेज का चुनाव

ब्रीडर विलेज ऐसे गाँव को चुना जाता है जिसके आस-पास एक दो किलोमीटर तक दूसरा कोई गाँव न हो। जिससे इस गाँव की बकरियां दूसरे गाँव की बकरियों के साथ मिलकर न चल सकें। जिस गाँव को ब्रीडर विलेज चुना जा रहा हो, वहां की महिलाएं बकरी पालती हों और उन्नत तरीके से बकरी पालने की इच्छा रखती हों। उत्पादक समूह में जुड़ने वाली हर महिला के पास पहले से दो बकरियां होनी जरूरी हैं। जोहार परियोजना की तरफ से बकरी उन्ही महिलाओं को मिलेगी, जिसने बकरी के रहने का बकरी शेड और बाड़ा बना लिया हो। जोहार की तरफ से ब्रीडर विलेज में उत्पादक समूह से जुडी हर बकरी पालक महिला को शेड और बाड़ा बनाने के 7500 रुपए अलग से दिए जाते हैं।

हर महीने किसान पाठशाला

ब्रीडर विलेज के हर गाँव में अलग-अलग तारीखों में हर महीने किसान पाठशाला का आयोजन किया जाता है। जिसमें परियोजना की तरफ से प्रशिक्षक जाते हैं, जो बकरियों की देखरेख, मेमने की देखरेख, उनके खान पान और उन मुद्दों पर चर्चा करते हैं, जिसे पशुपालक बताते हैं। सलैया गाँव में हर महीने की तीन तारीख को किसान पाठशाला का आयोजन होता है। एक ब्लॉक में जो ब्रीडर विलेज बनाया जाता है, उसके अच्छी नस्ल के बकरे उस पूरे ब्लॉक के पशुपालन करने वाले उत्पादक समूह में जाते हैं। सलैया गाँव के बकरे किस्को प्रखंड में चल रहे 24 उत्पादक समूह में जायेंगे।

ऐसे बनता है बकरी का शेड

बकरी शेड वो जगह होती है जहाँ पर बकरियां रात में सोती हैं। इसे बनाने के लिए 20 फीट लम्बाई, 10 फीट चौड़ाई और जमीन से नौ फीट की ऊंचाई पर बांस की खपच्चियाँ काटकर बनाया जाता है। नीचे का फर्श खुरदरा पक्का रखा जाता है जिससे बकरियों की पेशाब को आसानी से साफ़ किया जा सके, दूसरा अगर गर्मियों में दोपहर में बाड़े के पास धूप है तो इस बकरी शेड के नीचे हिस्से में बकरियों को बाँधा जा सके। शेड में बकरियों के चढ़ने-उतरने की सीढ़ी नुमा एक जगह बनाई जाती है और एक छोटा सा बांस का दरवाजा भी लगाया जाता है। बकरी शेड के पास में ही किसी पेड़ की छाया के नीचे चारों तरफ घेरकर एक बाड़ा बकरियों की संख्या के हिसाब से लम्बा चौड़ा बनाया जाता है। यहाँ बकरियां दिन में रहती हैं, रात में पीने का पानी और मिनरल ब्लॉक बकरी शेड में रख दिया जाता है।

मिनरल ब्लॉक खिलाने के फ़ायदे

मिनरल ब्लॉक बनाने के लिए एक किलो लाल मिट्टी या दीमक मिट्टी को अच्छे से छान लेते हैं, जिससे कंकड़ पत्थर न रहे। उसमें एक किलो पिसा नमक, छह-सात अंडे का भुजा छिलका और 200 ग्राम आटा या चोकर लेते हैं। सभी सामग्री को मिलाकर जरूरत के अनुसार पानी डालते हैं और रोटी नुमा बनाकर बीच में एक छेद कर देते हैं। इसे बकरी के शेड में राटा में रख देते हैं जिसे बकरी चाटती रहती है। इसको खिलाने से बकरी में जो प्लास्टिक कागज खाने की जो आदत होती है, वो खत्म हो जाती है। उनकी पाचन क्षमता बढ़ती है और पेट में कृमि नहीं होते हैं।

उत्पादक समूह खुशहाली की चाबी

ये अनुभवी महिलाएं उत्पादक समूह बनाकर जोहार परियोजना को दे रहीं रफ़्तार

आजीविका कनेक्शन डेस्क

रामगढ़ (झारखंड)। सखी मंडल से जुड़ी महिलाएं जो खेती करने का हुनर रखती हैं और जीविका के मजबूत संसाधनों से जुडी हैं अब वही महिलाएं गाँव-गाँव जाकर नये उत्पादक समूह बनाकर महिलाओं को जोड़ रहीं हैं। ये महिलाएं उत्पादक समूह बनाकर जोहार परियोजना को रफ्तार दे रही हैं।

गाँव-गाँव जाकर उत्पादक समूह बनाने वाली इस प्रक्रिया को प्रोड्यूसर ग्रुप यानि उत्पादक समूह (पीजी) ड्राइव और इन महिलाओं को कम्युनिटी रिसोर्स पर्सन के नाम से जाना जाता है। तीन चार महिलाएं दूसरे गाँवों में पांच दिन रहकर उत्पादक समूह बनाती हैं।

जब ये एक गाँव में उत्पादक समूह बना लेती हैं तब वहीं से ये दूसरे गाँव की तरफ रुख कर लेती हैं। इस ड्राइव की विशेषता यह है कि आसपास की सशक्त महिलाएं ही दूसरे गाँव जाकर अपनी खुद की कहानियाँ उत्पादक समूह बनाने के दौरान दूसरी महिलाओं के साथ साझा करती हैं जिससे दूसरी महिलाएं प्रभावित होकर आसानी से उत्पादक समूह से जुड़ जाती हैं।

गाँव-गाँव जाकर महिलाएं बना रही हैं उत्पादक समूह

जब रामगढ़ जिला मुख्यालय से लगभग 30 किलोमीटर दूर गोला प्रखंड के सुतरी गाँव पहुंचे तो हमने महिलाओं के एक समूह को इकट्ठा बैठे देखा जहाँ तीन महिलाएं बैनर पकड़कर कुछ समझा रहीं थीं। पूछने पर पता चला ये तीनों महिलाएं पास के गाँव की ही रहने वाली हैं और इस गाँव में उत्पादक समूह बनाने के लिए आयी हैं।

प्रशिक्षण दे रही गोला प्रखंड के बरियातू गाँव की गीता देवी (30 वर्ष) ने बताया, "इन दीदियों को हम अपनी आपबीती बताते हैं। सखी मंडल से जुड़ने के बाद हमारे घर के हालात कैसे बदले ये सुनकर दीदी लोग भी सोचने लगती हैं कि हम भी ऐसे ही अपनी जिन्दगी बदल सकते हैं।"

"जब उनकी सहमति होती है तभी उन्हें उत्पादक समूह में जोड़ते हैं। पांच दिन में उत्पादक समूह के बारे में पूरी जानकारी देकर हम दूसरे गाँव उत्पादक समूह बनाने के लिए चले जाते हैं," गीता आगे बताती हैं।

गीता वर्ष 2013 में माता लक्ष्मी महिला मंडल से जुड़ी और 2016 में ये आजीविका कृषक मित्र के लिए चुनी गईं। इनकी मेहनत और लगन को देखते हुए इन्हें झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी (जेएसएलपीएस) द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। अब ये इतनी सशक्त और सक्षम हो गयी हैं कि गाँव-गाँव जाकर दूसरी महिलाओं को प्रशिक्षित कर सकती हैं।

पहले करती थीं मेहनत-मज़दूरी

गीता सखी मंडल में जुड़ने से पहले एक साधारण महिला थीं जो मेहनत-मजदूरी करके अपने परिवार का भरण पोषण करती थीं लेकिन आज न केवल उनकी आजीविका सशक्त हुई है बल्कि उनकी अपनी एक अलग पहचान है। वो अपने खुद के गाँव में तो किसानों को प्रशिक्षण देती ही हैं, साथ ही दूसरे गाँव में भी दूसरी महिलाओं को प्रशिक्षण देती हैं। गीता के साथ इस गाँव में सुषमा भारती और सुनीता देवी भी आयी हैं। इन दोनों की कहानी भी गीता से मिलती जुलती ही है। कोराम्बो गाँव की सुनीता देवी (32 वर्ष) दूसरे गाँव में उत्पादक समूह की प्रक्रिया के बारे में बताती हैं, "हम लोग जिस भी गाँव में जाते हैं वहां पांच दिन उस गाँव की किसी दीदी के घर में या पंचायत भवन में रुकते हैं और खाना बनाने से लेकर सोने तक के बिस्तर सब लेकर जाते हैं। सुबह से लेकर शाम तक पांच दिन लगातार इन महिलाओं के बीच जाकर पहले इन्हें जोड़ने के लिए कहते हैं फिर पूरा प्रशिक्षण देते हैं।"

बीज लाने से लेकर अपनी फ़सल बाज़ार तक पहुँचाने में सक्षम

ये महिलाएं पांच दिन में उत्पादक समूह से जुड़ी महिलाओं को इतना प्रशिक्षित कर देती हैं जिससे ये सामूहिक रूप से बाजार से बीज लाने से लेकर अपनी फसल बाजार तक पहुँचाने में सक्षम हो जाती हैं। प्रशिक्षण ले रही सुतरी गाँव की चांदनी ग्राम संगठन की अध्यक्ष नीरुबाला देवी (28 वर्ष) ने बताया, "इन दीदियों की बात पर गाँव की दीदियों को ज्यादा भरोसा होता है क्योंकि ये आसपास गाँव की होती हैं और ये हमारी ही भाषा में हमें सबकुछ सिखाती हैं। इनके सामने गाँव की दीदी अपनी बात आसानी से रख पाती हैं।" वो आगे कहती हैं, "सखी मंडल से तो हम लोग बहुत पहले से जुड़े हैं। खेती और पशुपालन भी अपने हिसाब से कर ही रहे हैं लेकिन अब उत्पादक समूह में जुड़ने के बाद सामूहिक खेती पहली बार करेंगे।"

प्रशिक्षण के पांच दिनों का ऐसा रहता है शेड्यूल

जब कम्युनिटी रिसोर्स पर्सन उस गाँव में जाती है जहाँ उत्पादक समूह बनने होते हैं तो उस गाँव की सक्रिय दीदी पहले से ही गाँव में एक सूचना कर देती हैं। इनके गाँव में पहुंचने के बाद ये पहले दिन खुद पूरे गाँव में घूमती है और लोगों के बारे में जानने की कोशिश करती हैं। दिन भर घूमने के बाद शाम में एक आम सभा रखती है। ये आम सभा गाँव के लोगों की सहूलियत के हिसाब से रखी जाती है। इसी आम सभा में उत्पादक समूह में जुड़ने वाली महिलाओं की लिस्ट उनकी मर्जी से बना ली जाती है। दूसरे दिन प्रशिक्षण शुरू हो जाता है और सबसे पहले उन्हें उत्पादक समूह के फायदे बताये जाते हैं। तीसरे दिन भी प्रशिक्षण चलता है ये प्रशिक्षण उस ग्रुप को ध्यान में रखकर दिया जाता है जिस विषय में उनकी रुचि होती है उसी पर चर्चा होती है। जैसे अगर ग्रुप खेती करने में रुचि रखता है तो उन्हें उन्नत किस्मों के बारे में बताया जाता है।

वैज्ञानिक तौर-तरीके से खेती पर करने में ज़ोर

वैज्ञानिक तौर-तरीके से वो कैसे खेती करें इस पर जोर दिया जाता है। चौथे दिन उस समूह से पदों का चुनाव होता है किसे कौन सी जिम्मेदारी सम्भालनी है। प्रशिक्षण के आखरी दिन प्रति सदस्य उत्पादक समूह में जुड़ने के लिए 100 रुपए सदस्यता शुल्क और 1000 रुपये हिस्सा धन के रूप में लिए जाते हैं। यानि जब आप 1100 रुपए जमा कर देंगे तभी उत्पादक समूह का सदस्य बन सकते हैं। पांच दिन के प्रशिक्षण के बाद महिलाओं का ये ड्राइव दूसरे गाँव के लिए रवाना हो जाता है। यही प्रक्रिया हर उत्पादक समूह बनने में लागू होती है। अब तक 2100 से ज्यादा उत्पादक समूह इन हजारों महिलाओं के सहयोग से बन चुके हैं।

- तीन चार महिलाएं दूसरे गाँवों में पांच दिन रहकर बनाती हैं उत्पादक समूह
- उत्पादक समूह बनाने के दौरान खुद की कहानियाँ भी दूसरी महिलाओं के साथ करती हैं साझा

'तीस से पैंतीस दिनों की होती है ड्राइव'

वो आगे बताती हैं, "जब हम किसी ड्राइव में निकलते हैं तो वो 30-35 दिन की होती है जिसमें छह-सात उत्पादक समूह बनाने होते हैं। हमें एक दिन का पांच सौ रुपये मिलता है। इससे हमारी आमदनी भी बढ़ती है और जानकारी भी। समूह की दीदी जब हमारी कहानी सुनती हैं तो वो खुद के भी हालात बदलना चाहती हैं।"

राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत बने सखी मंडलों की ये खूबी है कि किसी भी ट्रेनिंग के लिए प्रशिक्षक कहीं बाहर से न लाये जाए बल्कि सखी मंडल से जुड़ी महिलाओं में ही ये स्किल विकसित की जाये जिससे वो खुद प्रशिक्षण देने में सक्षम हो सकें। झारखंड स्टेट लाइवलीहुड में ऐसी हजारों की संख्या में महिलाएं हैं जो गाँव-गाँव जाकर दूसरी महिलाओं को आज प्रशिक्षित कर रहीं हैं।

हेटगढ़ा गाँव की सुषमा भारती (27 वर्ष) बताती हैं, "जब उत्पादक में जुड़ने के लिए महिलाएं राजी हो जाती हैं तब उन्हें उन्नत खेती, मत्स्य पालन, लघु वनोपज, बकरी पालन, सूकर पालन और मुर्गी पालन के बारे में विस्तार से बताया जाता है। क्षेत्र के हिसाब से महिलाएं इन विषयों में से जिस विषय पर अपनी ज्यादा रुचि दिखाती हैं उस पर उन्हें ज्यादा जानकारी दी जाती है और वही करने के लिए कहा भी जाता है।"

वो आगे बताती हैं, "क्षेत्र के हिसाब से ट्रेनिंग के विषय भी चुन लिए जाते हैं। जैसे किसी क्षेत्र में पानी की वजह से खेती नहीं हो सकती तो वहां पशुपालन पर जोर दिया जाता है। जिन क्षेत्रों में जिंगल होते हैं वहां वनोपज को बढ़ावा देने के लिए ट्रेनिंग दी जाती है।"

फोटो: जेएसएलपीएस

मछली पालन से बदल रहीं ग्रामीण महिलाओं की ज़िंदगी

300
रुपए ख़र्च करके एक डोभा में एक ग्रामीण महिला की आमदनी 2000-3000 रुपए

600
से ज़्यादा पहुंच चुकी है उत्पादक समूह की संख्या, जो अभी कर रहे हैं मछली पालन

5528
डोभा में मछली पालन करने वाले परिवारों की है संख्या

2017
परिवार कर रहे हैं केज मछली पालन

795
बीज उत्पादन करने वाले परिवारों की है संख्या

जोहार परियोजना के तहत ग्रामीण स्तर पर लगातार चलते रहते हैं इस तरह के प्रशिक्षण

आजीविका कनेक्शन डेस्क

रांची। मछली उत्पादन में झारखंड आज अग्रणी राज्यों में शामिल हो चुका है। यहाँ बड़े तालाबों से लेकर छोटे डोभों तक मछली उत्पादन कर लोगों की आजीविका सशक्त हो रही है।

जोहार परियोजना में मात्स्यिकी विकास के तहत आधुनिक तरीके से तालाब और डोभों में मत्स्य पालन, मत्स्य बीज उत्पादन, जलाशयों में केज एवं पेन कल्चर द्वारा मत्स्य उत्पादन में वृद्धि कर मत्स्य पालकों की आमदनी को दोगुना करने का लक्ष्य रखा गया है।

उत्पादक समूह से जुड़ी आज सैकड़ों महिलाएं छोटे-छोटे डोभों में 300-400 रुपये खर्च करके 2000-3000 रुपए दो तीन महीने में कमा लेती हैं।

गुलाब आजीविका उत्पादक समूह से जुड़ी उजाला देवी (25 वर्ष) बताती हैं, "पिछले साल एक छोटे से डोभे में डेढ़ किलो मछली का बीज डाला था जिसमें सात किलो मछली निकली। गाँव के बाजार में ही 150 रुपए किलो बेची। इतनी मामूली लागत में इतना लाभ पाकर खुशी मिली।"

उजाला देवी रांची जिला मुख्यालय से करीब 35 किलोमीटर दूर अनगड़ा ब्लॉक के बढ़ी गाँव की रहने वाली हैं। उजाला की तरह जिन महिलाओं के पास छोटे डोभे हैं वो इनकी तरह ही उसमें मामूली लागत लगाकर मछली उत्पादन कर अपनी आजीविका बढ़ा रही हैं।

> "पिछले साल एक छोटे से डोभे में डेढ़ किलो मछली का बीज डाला था जिसमें सात किलो मछली निकली। गाँव के बाजार में ही 150 रुपए किलो बेची। इतनी मामूली लागत में इतना लाभ पाकर बहुत खुशी मिली।
>
> **उजाला देवी, गुलाब आजीविका उत्पादक समूह**

जिन किसानों के पास पानी के श्रोत हैं और वो मछली पालन करना चाहते हैं, ऐसे किसानों को जोहार परियोजना के तहत उत्पादक समूह से जोड़कर उन्हें मछली पालन करने के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा है। झारखंड में मनरेगा की तरफ से डोभा (गड्ढे) वाटर रिचार्ज के लिए बनाये गये थे, लेकिन अभी महिलाएं इसमें जोहार परियोजना से जुड़कर पहली बार मछली पालन कर अच्छी आमदनी ले रहीं हैं। जो उत्पादक समूह अभी मछली पालन कर रहे हैं उनकी संख्या 600 से ज्यादा पहुंच चुकी है।

अनगड़ा ब्लॉक के सिंगारी आजीविका उत्पादक समूह की सदस्य रीना देवी (23 वर्ष) ने बताया, "पिछले साल गाँव के सामुदायिक तालाब में 40 हजार की लागत लगाकर मछली पालन किया था, जिसमें हमें डेढ़ लाख रुपये का मुनाफा हुआ। पहली बार मछली पालन में इतना लाभ हुआ तो बहुत खुशी मिली।"

वो आगे बताती हैं, "पहले हम लोग सोचते थे मछली पालन कैसे करें। तालाब भी हमारे पास नहीं था लेकिन उत्पादक समूह में जुड़ने के बाद हमें ये पता चला कि छोटे डोभों और गाँव के सामुदायिक तालाबों में भी मछली पालन करके अच्छा लाभ कमाया जा सकता है।"

मत्स्य पालन करने वाले उत्पादक समूह के गठन के बाद इस समूह को जोहार परियोजना की तरफ से मछली पालन की आधुनिक तकनीकी के बारे में बताया जाता है। ग्रामीण स्तर पर इस तरह के प्रशिक्षण लगातार चलते रहते हैं। हर उत्पादक समूह में एक मत्स्य मित्र होता है जो उस पूरे उत्पादक समूह को मछली पालन करने में पूरा सहयोग करता है। इन उत्पादक समूहों को केवल मछली पालन ही नहीं सिखाया जाता, बल्कि उन्हें बाजार भी मुहैया कराया जाता है।

फोटोः जेएसएलपीएस

उत्पादक समूह से जोड़कर लोगों को मछली पालन करने के लिए किया जा रहा है प्रशिक्षित।

चार मॉडल पर हो रहा मछली पालन

जोहार परियोजना में चार मॉडल पर मछली पालन हो रहा है, जिसमें प्राइवेट फिश फार्मर, केज फिश फॉर्मिंग, सामुदायिक तालाब, छोटे-छोटे मौसमी तालाब और डोभे शामिल हैं। इसमें सदाबहार तालाब, दीर्घ मौसमी तालाब, लघु मौसमी तालाब और घेराबंदी करके जलाशयों का ढांचा बनाकर इनमें भी मछली पालन करने के बारे में बताया गया है। डोभा का उपयोग ज्यादातर सीड प्रोडक्शन के लिए किया जा रहा है। परियोजना की तरफ से एक एकड़ तालाब के सुधारीकरण, हार्वेस्टिंग मशीन, जाल और यंत्र के लिए 26,725 रुपये की राशि दी जा रही है। वहीं प्रति एकड़ सीड प्रोडक्शन के लिए 21,578 रुपये की राशि दी जा रही है।

मछली पालन में इन बातों का रखें ध्यान

जिस तालाब या डोभा में मछली पालन करना है उसका साफ़-सुथरा होना बहुत जरूरी है। पानी की गुणवत्ता जरूर चेक करें। पानी का पीएच 7.5 से 8.5 अच्छा माना जाता है। पानी में चूना डालकर उसका पीएच मेंटेन करें। तालाब में जो मछली जीरा (बीज) डाला जाए उसका साफ रहना जरूरी है। चार से पांच फीट पानी रहना चहिये।

मछली के बीज का ऐसे करें संचयन

मत्स्य बीज संचयन का आधार सही समय, सही संख्या, सही बीज माना जाता है। बीज संचयन में ये ध्यान रखा जाता है कि स्पान/जीरा ऑक्सीजन पैक युक्त वाली पालीथिन में ही लायें, इससे परिवहन के दौरान मृत्यु दर कम होती है। बीज का संचयन प्रातः काल या सूर्यास्त के समय करना चाहिए जब पानी ठंडा हो। इसके अलावा प्लास्टिक की थैली में भरे जीरे को सीधे पानी में न डालें। इसे थोड़ी देर तालाब के पानी में रखें ताकि थैली और तालाब के पानी का तापमान बराबर हो जाए। संचयन के दिन तालाब में पूरक आहार न छींटें। जीरों को स्वतः थैली से तालाब में जाने दें। एक गमछा को पानी में डुबाते हुए चारों कोनों पर पकड़ें और इसके ऊपर मछलियों को छोड़ें। यदि पोटेशियम परमैगनेट के घोल में जीरा को उपचारित कर दिया जाए तो इनकी जीवितादर भी अच्छी होती है।

क्या कहते हैं मत्स्य मित्र?

पिछले दस वर्षों से मछली पालन कर रहे जीवधन वेरिया ने पिछले वर्ष मछली पालन का अनुभव साझा किया। वह कहते हैं, "पिछले साल अगस्त महीने में 80 डिसमिल तालाब में छह हजार मछली डाली थी। इसे 150-200 रुपये किलो में बेची, अच्छा लाभ हुआ था।" उन्होंने आगे बताया, "मछली को शुरुआत में बेसन, गुड़, सरसों का तेल अंडा इन सबको मिक्स करके खिलाते हैं। अभी उत्पादक समूह में मत्स्य मित्र हैं और एक समूह के आलावा दूसरे समूहों के लोगों को भी जानकारी देते हैं। हम लोगों को बताते हैं कि मछली केवल पानी में ही जीवित नहीं रह सकती उसे समय से ऊपर से भोजन देने की भी जरूरत है।"